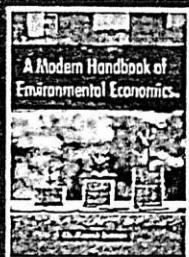
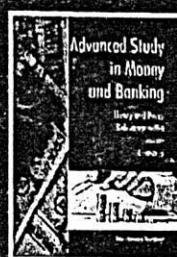
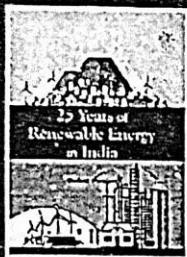


OUR PUBLICATIONS



ISSN 0975-119X

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 12 अंक 3 मई-जून 2020

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की
मानक शोध पत्रिका

दृष्टिकोण

फला, मानविकी एवं वाणिज्य की गानक शोध पत्रिका

संपादक
डॉ. अश्विनी महाजन
एसोसिएट प्रोफेसर, डी.ए.टी. पी.जी. कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

दृष्टिकोण प्रकाशन

वर्ष : 12 अंक : 3 □ मई-जून, 2020

दृष्टिकोण

संपादक मंडल

डॉ. अरुण अग्रवाल	डॉ. पवन सिंह
देन्ट विश्वविद्यालय, पीटरबोरोग, ऑन्टारियो	नी.आरए, विहार विश्वविद्यालय, मुमफसपुर
डॉ. बद्या शंकर तिवारी	एस. एस. से. सिंह
एवापानी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय	पटना विश्वविद्यालय, पटना
डॉ. आमने बच्चाश तिवारी	डॉ. अमित कुमार सिंह
काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, यामुणसी	जे.पी. विश्वविद्यालय, छपर
डॉ. प्रकाश सिन्हा	डॉ. मिथिलेश्वर
इताहाबाद विश्वविद्यालय, इताहाबाद	शेर कुंवर तिंह विश्वविद्यालय, आग
डॉ. दीपक खाना	डॉ. अमन कानू विश्वविद्यालय, भागलपुर
देन द्याल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर	डॉ. अद्वेश चाहोल्ज
डॉ. अरुण कुमार	दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
रांची विश्वविद्यालय, रांची	डॉ. स्वदेश सिंह
डॉ. महेश कुमार सिंह	दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
सिद्ध कानू विश्वविद्यालय, दुमका	

संपादकीय सम्पर्क:

448, पॉकेट-5, मधू विहार, फेज-I, दिल्ली-110091

फोन : 011-22753916

e-mail : editorialindia@gmail.com; delhijournals@gmail.com

©Editorial India

Editorial India is a content development unit of Permanence Education Services (P) Ltd.

मूल्य: ₹ 2500.00

नोट: पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विवार अपने हैं। उसके लिए पत्रिका/संपादक/संपादक मंडल को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। पत्रिका से सम्बंधित किसी भी विवाद के निपटारे के लिए न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा।

इस अंक में

बेगूसराय जिला की बुँद प्रतिमार्ये—तुनि कुमारी
पौर्योत्तर काल: भारतीय कला एवं स्थापत्य कला के सांस्कृतिक विकास का काल रहा
(200 ई० प० से 200 ई० तक)—सुरजीत कुमार सिंह
निगमित अभिशासन: एक समग्र अवलोकन—डॉ. अमरनाथ पासवान; मनीष चन्द्र
भारत में ग्रामीण महिलाओं पर वैश्वीकरण का प्रभाव—डॉ. जय प्रकाश यादव; डॉ. अलोक कुमार कश्यप
भारत में पर्यावरणीय प्रदूषण और महात्मा गांधी की भूमिका का अध्ययन—डॉ. कंचन; डॉ. सतीश चन्द्र जैसल
वैश्वीकरण के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव का एक समाज शास्त्रीय विश्लेषण
—डॉ. अलोक कुमार कश्यप; डॉ. जय प्रकाश यादव
गरीबी एवं जनसंख्या: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन—डॉ. सतीश चन्द्र जैसल; डॉ. कंचन
भारतीय राजनीति में एश्योपिता महात्मा गांधी की भूमिका: सत्याग्रह के संदर्भ में—डॉ. अमिय कुमार
परंपरा का प्रभाव और हिन्दू आलोचना—मनीष लोमर
वर्तमान परिवेश में भारतीय लोक संवेदक: समस्याएं एवं सुधार की आवश्यकता—डॉ. मो० रेयज अहमद
नवउदारवाद की आकामकता और दासित साहित्य को चिन्नार्ण—शीतांशु
कोणार्क नाटक में युगीन चेतना—डॉ. शिवकुमार सी.एस. हड्डपद
गांधी और अंवेदकर के जाति विषयक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन—माला मेश्राम
असमीया विवाहीयों के विविध पक्ष—पूजा बरुवा
डॉ. भूपेन हाजरिका के गीतों में अधिव्यक्त सामाजिक चेतना—डॉ. प्रीति बैश्य
नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों में नारी संघर्ष—सुरेश कुमार
नागर्जुन और भूपेन हाजरिका की काल्य-संवेदना: एक अवलोकन—डॉ. रीतामण वैश्य
नवीन लोक प्रशासन में समसामयिक विकास का एक अध्ययन—सारैभ सुमन; माला मेश्राम
प्राचीन भारत में पांचाल गणराज्य की महत्वा का ऐतिहासिक विश्लेषण—प्रज्ञा शिखा
भारत छोड़े आंदोलन में भागलपुर की भूमिका: एक अध्ययन—डॉ. संजय कुमार सहनी
इतिहास क्या है: एक सुस्पष्ट अध्ययन?—डॉ. चन्द्रन कुमार
महात्मा गांधी का स्वच्छता अभियन—सुनीता कुमारी
भारत और इजराइल संबंध स्वतंत्रता से अब तक—अजय कुमार
एक राष्ट्र, एक चुनाव—ऋतेश भारद्वाज
भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर प्रथम विश्व युद्ध का प्रभाव—डॉ. सुरेन्द्र कुमार सिंह
एंची जिला के जनजातियों में सामाजिक-आर्थिक विकास का स्तर—मुवनेश्वर कुमार मंडल
एजस्यान के मानव संसाधन विकास का हनुमानगढ़ एवं श्रीगंगानगर जिलों की सामाजिक-आर्थिक
स्थिति पर प्रभावों का विश्लेषणात्मक विवेचन—अनिल कुमार; डॉ. कैलाश चन्द्र नायमा
भारत में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश के क्षेत्रवार अन्तर्राष्ट्रीय के आर्थिक प्रभावों का
मात्रात्मक विश्लेषण—परवेज अली; डॉ. कैलाश चन्द्र नायमा
राजस्थान में ग्रामीण विद्यालय बालिका शिक्षा में द्वापाउट का विश्लेषण—डॉ. श्रवण राज

1	आधुनिक भारत का इतिहास—कुमार विशाल	973
3	पहरिया जनजाति—मधुलिका कुमारी	978
7	साहित्यानुवाद के इतिहास की इटि और प्रकृति—डॉ. स्वाती ठाकुर	980
13	अलका सरावगी के उपन्यासों में चित्रित मध्य वर्ग का सामाजिक संदर्भ : एक अध्ययन—डॉ. ललन कुमार	986
17	भारतीय गाँव और डॉ. अंवेदकर : एक भौगोलिक दृष्टावलोकन —धीरज कुमार शर्मा; सत्य प्रकाश; आनंद कुमार; जैकी कुमार	989
20	शिक्षा एवं रोजगार के प्रति मुस्लिम महिलाओं की मनोवृत्ति पर सामाजिक कारकों का प्रभाव—सवा फरहीन पटना शहर के ट्रैफिक पुलिस की मनोवैज्ञानिक स्थिति पर वायु प्रदूषण का प्रभाव का एक अध्ययन —सुजोत कुमार द्वै; डॉ. वंदना कुमारी	995
24	बन्जिका संगीत में देवी-देवता—डॉ. श्रीनिवास सुप्रांगु	999
27	हंसराजक : व्यक्तित्व और कृतित्व—सुमिकम कुमारी	1004
30	बिहार में जनजाति और सामाजिक परिवर्तन : एक अध्ययन—डॉ. प्रियंका कुमारी	1017
33	इन्टर स्तरीय के छात्र एवं छात्राओं का दुर्दि-लक्ष्य तथा सृजनात्मकता के आधार: एक अध्ययन—डॉ. अर्चना सिंह तार सप्तक का कला पश्चीय अध्ययन—धूपर कुमार शुक्ल	1020
41	बिहार में क्रांतिकारी अंदोलन एवं स्थानीय नेतृत्व—डॉ. अंगूरी बेगम	1024
46	बन्जिकांचल में प्रचलित वैवाहिक मंलग-गीत : एक अध्ययन—डॉ. संतोष कुमार	1028
50	भारतीय राजनीति में क्षेत्रियावाद एवं भाषा का प्रश्न : एक अध्ययन—डॉ. सुधीर कुमार	1033
56	उप्र के साथ बदलती पोषण संबंधी आवश्यकताएं—डॉ. प्रज्ञा कुमारी	1040
62	नवजागरण और किसान सभा—चन्द्रमौली कुमार	1047
69	नवराषाण सुगा—डॉ. पंकज कुमार पांडेय	1054
72	आर्थिक शिथितता—डॉ. बिमलेश कुमार पाण्डेय	1059
80	ललितक कथाएं चित्रित समाज—डॉ. गोपाल कुमार	1066
85	महाराष्ट्रीय और महारांग—डॉ. राकेश कुमार	1070
90	छायाचार के विकास में पृष्ठित मुकुटपर पाण्डेय का योगदान—डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति; श्री बीरु लाल बरगाह	1075
95	स्वामी विवेकानंद के मानवतावाद और कांग्रेस की स्थापना तथा इतिहास—डॉ. संतोष कुमार राय	1079
100	बजट की प्रासंगिकता एवं समीक्षा 2020: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन—इतेश कुमार सिंह	1086
104	“मौर्योत्तर कालीन भारत में सिंचाई व्यवस्था : एक विश्लेषण” (185 ई० प० से 554 ई० तक)	1089
108	—डॉ. रंजीत कुमार राय; डॉ. नीता कुमारी	1092
116	क्रिश्चियन मिशनरी—डॉ. कुमारी अलका चौधरी	1097
120	बिहार के प्राचीन इतिहास के झोत—मधुलिका कुमारी	1100
128	लघु वित्त सहायता और आर्थिक सशक्तिकरण—डॉ. राजीव कुमार रंजन	1106
134	भारत के अलगाववादी आंदोलन—डॉ. गीतांजलि	1112
143	बिहार में कृषि एवं रिंचाई का इतिहास—डॉ. भौमेज कुमार	1116
	एजकमल चौधरी की हिन्दी और मैथिली कहानियाँ: एक सिक्के के दो पहलू—अनिरुद्ध कुमार यादव	1120

दृष्टिकोण

छायावाद के विकास में पण्डित मुकुटधर पाण्डेय का योगदान

डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति

शोध पर्याप्तक,
विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, पण्डित सुदरलाल शर्मा (मुक्त) वि.वि.छत्तीसगढ़, विलासपुर

श्री बीरु लाल बरगाह

शोधार्थी, सहा. प्राध्यापक (हिंदी) राजीव गंधी शास, महाविद्यलय, सिमगापण्डित सुदरलाल शर्मा (मुक्त) वि.वि.छत्तीसगढ़, विलासपुर

शोध सारांश :

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय और छायावादी काव्य को सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि यह है कि उसने खड़ी बोली हिंदी को आधुनिक मानवोंपा से सुन्दर रचनात्मक और सम्प्रदायों का व्यापास बनाने की चल की। साहित्य के क्षेत्र में प्रायः यह देखा गया है कि पूर्ववर्ती युग के अधारों को पूर्ण करने के लिए पर्वतों पुगा का जन्म होता है। 'छायावाद' के मूल में भी यही सिद्धान्त काम कर रहा है, क्योंकि द्वितीय युगीन कविताएँ कोरो उपरेक्षा मात्र रह गई। उसमें समाज सुधार को चर्चा व्यापक रूप से को गई है, कुछ आञ्जनीयों का ही विवरण निलित है, इतिवृत्तात्मक, उपरेक्षात्मक और नैतिकता की प्रधानता के कारण कविता में निरसता आ गई, कवियों का हृष्य उस नीतसत्ता-में ज्वर गया और कविता में सरसता लाने के लिए छटपटा उठे। इसके लिए छायावादी कवियों ने काव्य में 'वह' के स्थान पर 'मैं' शैली अपनायी। छायावादी कवियों ने काव्य की विषय वस्तु को अपने जीवन में ही दूखने का प्रयास किया। अपने जीवन के निजी प्रसंगों, घटनाओं एवं व्यक्तित्व भावनाओं को अनेक छायावादी कवियों ने काव्य का विषय वस्तु बनाया। मुकुटधर पाण्डेय जो को सूख्य दृष्टि ने छायावाद की भूल भावना आत्मनिष्ठ अन्तर्दृष्टि को पहचान लिया। इस नीतसत्ता से मुक्ति पाने के लिए पाण्डेय जो ने वैयक्तिक सुख-दुख, स्वयं को अनुभूति और प्रकृति को माध्यम बनाया।

भूमिका :

वैसर्वी शास्त्रीयी की महान विभूतियों में से एक पदमश्री साहित्य वाचस्पति पण्डित मुकुटधर पाण्डेय जो संकमण काल के सर्वाधिक सामर्थ्यवान कवियों में अग्रणी है। द्विवेदीयुग और छायावादी युग के बोच की एक महत्वपूर्ण कड़ी पाण्डेय जो को काव्य यत्र को समझें विना खड़ी बोली हिंदी के विकास को सही ढंग से नहीं समझ सकते हैं। डॉ. बलदेव जी कहते हैं "पाण्डेय जो ने द्विवेदीयुग के शुक्र द्यान में नृत्न सूर भय तथा नववंस की अनुवानी का युग प्रवर्तन का ऐतिहासिक कार्य किया।" पाण्डेय जी के काव्य में द्विवेदी एवं छायावादी युगीन काव्य की समीक्षा विशेषताएँ परिलक्षित होती है। एक और उनके काव्य में द्विवेदी युग के महान आदर्श जिसमें लोकान्तर प्रभुता से अधिक्यक्त होता है, तो वहाँ दूसरी और आंतरिक सुन्दरता, सूख्य वित्रण, किसी वस्तु या प्रकृति का असाधारण चित्र आदि छायावादी विषयोंताएँ दृष्ट्य होती हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि पाण्डेय जो के काव्य लेखन में स्वच्छतावाद और आर्द्धवाद जैसी दो विरोधी प्रवृत्तियों देखने को मिलती है। पाण्डेय जो संवर्ग्रथम काव्य को उन्मुख हुए, उसके परवात वे

दृष्टिकोण

विचारक, साहित्य समीक्षक, अनुवादक और गद्य साहित्य तंत्रक के रूप में प्रसिद्ध हुए। उनको 'कुरी के प्रति' रचना को पद्मलाल पुनात्तात बख्ती जी ने प्रथम छायावादी कविता के रूप में स्वीकार किया।

छायावाद कहते ही एक ऐसे समय का बोध होता है कि उस समय के केंद्र में छाया हो। छायावाद का समय 1918-1936 तक मानी जाती है। उस समय जो काव्यादेशन चला उसे हिंदी में छायावाद कहते हैं। हिंदी साहित्य का स्वर्णयुग पवित्रकाल को माना जाता है और आधुनिक हिंदी (बहुली बोली) का स्वर्णयुग 'छायावाद' को माना जाता है। पण्डित मुकुटधर पाण्डेय ही 'छायावाद' के प्रवर्तक हैं।

शोध प्रविधि : प्रस्तुत शोध प्रबंध में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक शोध का सहाय लिया गया है।

विवेचन :

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय जो का जन्म 30 सितम्बर सन् 1895 ई. को विलासपुर जिला वाराणसी में जांगीर-चांपा जिले के बातपुर नामक ग्राम में हुआ था। महानदी के तट प्रदेश में बसा यह गाँव रायगढ़ सारांग भाग पर चंद्रपुर के पूर्व दिशा में स्थित है। महानदी के पुल से देखने पर घोनी अमराइयों से झांकता हुआ बालपुर गाँव मानों प्रकृति की गाँद में बैठा हुआ सा प्रतीत होता है। महानदी की सुन्दरता पर मुख्य होकर पाण्डेय जी लिखते हैं -

"किनना सुन्दर और मनोहर, महानदी यह तेरा रूप।

कलकल मध्य निर्वल जलधारा; लहरों की ही छाया अनुपा।" महानदी-

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय ने सन् 1920 ई. में जबलपुर-मध्यप्रदेश से निकलने वाली पत्रिका 'श्रीशारदा' में 'हिंदी में छायावाद शोर्पे' से चार निवंधों की एक लेखात्मा छायावादी। इन चारों निवंधों में पांच बातों को आंतर्धान इंगित किया है जिसमें वैश्विकता, स्वातंत्र्य बोध, रहस्यवादिता, शैतोग्राम वैश्विष्ट्य और अस्पृश्यता।

'छायावाद' का नामकरण पण्डित मुकुटधर पाण्डेय जी ने किया है। डॉ. विनय मांहन शर्मा को एक पत्र में लिखा है—“छायावाद नाम सर्वथा मेरा गढ़ा हुआ है और मैंने पराष्पर सत्ता के प्रति अस्पृश्य रूप से व्यक्त भावों की रसना के लिए इसे प्रयुक्त किया था।” 'कुरी के प्रति' रचना के बारे में उनका कहना है—“‘एकि में कुरी के करुण स्तर सुनकर विस्तर पर पड़े पड़े मैंने मन में ही कुरी के प्रति की रसना कर डाली। तब मुझे आरचर्च हुआ कि छायावाद लिखा नहीं जाता, अनुभूति डाहा अपने आप ही लिख जाता है।”

श्रीशारदा 1920 में दूसरा लेख है 'छायावाद क्या है?' प्रार्थक पर्वतीयों ही हिंदी में यह विल्कूल नया शब्द है। अंग्रेजों या पाश्चात्य साहित्य अथवा बंग साहित्य को वर्तमान स्थिति को कुछ भी जानकारी रखने वाले समझ जाएंगे कि यह शब्द डलेजपवर्पत के लिए आया है।"

युगोनीय पुनर्जागरण की शुरूआत इटली में हुई है। इसी प्रकार भारतीय पुनर्जागरण की शुरूआत बंगल में। बंगल में ईसई संघों द्वारा ईश्वर की प्रार्थना करते समय उन्हें अपने ऊपर ईश्वर की छाया का आभास होता था जिसे फैन्टेस्माटा (Fantasmata) कहते हैं। इस तरह की आध्यात्मिक छाया का भाव अनुभूति रवीन्द्रनाथ टैगोर की कविताओं में दिखाई पड़ती है। रवीन्द्रनाथ टैगोर को उनकी कविति 'गोतांसिति' के लिए सन् 1913 ई. में साहित्य का प्रथम नोबेल पुरस्कार मिला और हिंदी के कवियों ने रवीन्द्रनाथ टैगोर की कविताओं का अनुकरण किया। तत्परचात् 'छायावाद' नाम से आंदोलन चल पड़ा।

छायावाद विशेषक, लेखात्मा से पहले मार्च 1920 ई. हिंदूकारिणी पत्रिका में छायावाद की संक्षिप्त परिचय 'चरणप्रसाद' नामक कविता में दी है -

"माया क्या वह छायावाद

है न कहो उसका अनुवाद"

छायावाद शब्द का प्रथम प्रयोग सन् 1920 ई. के आसपास "द्विवेदी युग के व्योब्द भावों की अधिकारी और आलोचकों ने निंदा या धृण के भाव से नहीं 24-25 वर्षों के एक अधिकारी नवयुवक ने सद्भावना पूर्वक किया था।" ये नवयुवक और कोई नहीं स्वयं मुकुटधर पाण्डेय जी थे।

दृष्टिकोण

पिंडत मुकुटधर पाण्डेय और छायावादी काव्य की रचने बढ़ी उपलब्धि यह है कि उन्होंने एही बोली हिंदी को आधुनिक भावयोग से युक्त रचनात्मक और सम्प्रदाशाली काव्यभाषा बनाने की पहल की। 'हिंदी में छायावाद' नियंथा के प्रधम नियंथ 'कवि स्वातंत्र्य' में पाण्डेय जी ने रीति ग्रंथों की प्रतीतियों से युक्त होकर काव्य में अधिकात्म तथा भाव, छन्द, भाषा के प्रकाशन रीति में भौतिकता की आवश्यकता पर जोर दिया है।

"छायावाद एक ऐसी मायामय सूखम वस्तु है कि शब्दों द्वारा उसका ठीक-ठीक वर्णन करना असंभव है। शब्द अपने स्वामायिक मूल्य खोकर सांकेतिक चिह्न मात्र हुआ करते हैं।"

छायावाद के कवि वस्तुओं को असाधारण दृष्टि से देखते हैं। उनकी रचना की समर्पण विधेयताएँ उनकी इस दृष्टि पर आधारित होती है, वह क्षणपर में वस्तुओं को विजली की तरह स्पर्श करती हुई निकल जाती है। अस्थिरता और क्षीणता के साथ उसमें एक तरह की विचित्र उन्मादकता और अंतरंगता होती है जिसके कारण वस्तु उसके प्राकृतिक रूप से भिन्न रूप में दिखाई पड़ती है। यह अंतरंग दृष्टि ही छायावाद की विचित्र प्रकाशन रीति का मूल है। उसमें किसी वस्तु या दृश्य का ज्ञानों का त्वयि वित्तिया जाता है पर शब्द ऐसी वैष्णवत होते हैं कि भाषा उड़ती हुई जान पड़ती है। ऐसी रचनाओं में शब्द अपने वास्तविक मूल्य खोकर सांकेतिक चिन्ह नहीं होते हैं।

इस प्रकाश मुकुटधर पाण्डेय जी की सूखम दृष्टि ने छायावाद के मूलवाक्याना आत्मनिष्ठ अन्तर्दृष्टि को पहचान दिया था। नियंथ 'हिंदी में छायावाद' इस नियंथ के माध्यम से छायावाद पर लगाये गये अस्पष्टता आदि आरोपों का खण्डन करते हुए नियंथ है—“छायावाद की आवश्यकता हम इस्तिष्ठ समझते हैं कि उससे कवियों को भाषा प्रकाशन का एक नया मार्ग मिलेगा। इस प्रकार के अनेक रीतियों को होना ही उन्नत साहित्य का लक्षण है।”

मुकुटधर पाण्डेय की रचनाओं में मन के वंचन की पीड़ा की अभिव्यक्ति है जो स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए छटपट्य रही है। काव्य स्वातंत्र्य में पाण्डेय जी के शब्द हैं संसार में प्रत्येक मनुष्य स्वतंत्रता चाहता है, निर भी उसे मानसिक भूमि में पत्रंत्र रहना क्यों पसंद होगा यह बात समझ में नहीं आती।

डॉ. नामप्रसाद सिंह का कथन है—“छायावाद का ऐतिहासिक एवं तात्त्विक विवेचन छायावाद पर बहला नियंथ होने के साथ ही एक अत्यन्त सूखवृक्ष प्रभावशाली संस्कृती भी है। इस नियंथ का महत्व ऐतिहासिक ही नहीं, स्थायी भी है।” पाण्डेय जी ने भावों की छाया या अस्पष्ट-अप्रत्यक्ष स्वरूप के लिए सांकेतिक अभिव्यक्ति हेतु छायावाद नाम सुझाया। वे छायावाद को सल्ल बनाकर जन समाज में लोकप्रिय बनाने की पक्षपाती रहे। पाण्डेय जी के 'कविता' शीर्षक नियंथ काव्यादर्श और छायावाद के पर्याय को प्रमाणित करते हैं। वे काव्य में लोकगीतों की सरसारी व श्रम-संकल्प का समावेश करना चाहते थे। उनका ध्यान गंध में काव्य करने वाले गरीब किसानों, मजदूरों की ओर गया। उन्होंने श्री की भीमा गाई—

“धन्य तुम ग्रामीण किसान-

सरलता, स्थिय औंदार्य निधान

छोड़ जन संसुख नार निवास

किया क्यों विजन ग्राम में गेह

नहीं प्रासादों की कुछ छाड

कुटीरों से बर्वों इतना नेह।” -किसान

पाण्डेय जी काव्यकला को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि—“दृश्यवृद्धी भाषा विचार का जान ही काव्य है, कोविता प्रभावोत्पादक और मनोरंगक होती है। सौंदर्य वर्णन के सिवाय कविता में कुछ ऐसी विशेषता होनी चाहिए कि उसके पाठ से सर्वत्र ईश्वरीय भाव अथवा एक अदृश्य शक्ति या किसी अद्विष्ट नियम की व्यापकता या प्रधानता हो। साथ ही वे कहते हैं कि मानव जीवन का प्रवाह जब आध्यात्मिक भावों के सम्पुद में जाकर लीन हो जाता है, तब वह अपने अंतिम लक्ष्य पर पहुँच जाता है।

प्रथम विश्वव्युद्ध के पश्चात् भारतीय जनता नियरा के साथ में दूख ही थी। ग्रिटिंश सत्ता के अत्याचार के कारण कवियों में अंसतोश और विशेष के भाव थे, वे इसे व्यक्त करने में असमर्थ रहे। इस संक्रमण काल में कविता शीर्षक नियंथा के अंतर्गत पाण्डेय जी ने नवयुवक कवियों को प्रोत्साहित करते हुए लिया है—“हमारे कवि और लेखक इस और सचेष्ट हैं और वे देख की आवश्यकता

दृष्टिकोण

को समग्रकर जन जागरण, एकता बीरता और स्वतंत्रता आदि के भाव बरबर फैला रहे हैं। यह बहुत ही शुभ लक्षण है और यही अभीष्ट फल की प्राप्ति होगी।”

• ऐसा की दुर्ला पर चिंता व्यक्त करते हुए कवि आर्य सन्तानों को जागृत करने, का संकेत्य सेते हैं। उठो चेतो की यह पर्कितयां उत्तरोत्तरीय है :

“उठो हे आर्य सन्तानों, सवेरा हो उका घारो।

समय यह है न सोने का तजो आलस्य को भाई।

तगो कर्तव्य में अपने भगे दाविद्य दुःखदाई।

उदय हो सौख्य सूरज का गगन में लालिमा छाई।” -उठो चेतो

पिंडत मुकुटधर पाण्डेय की रचनाओं में साहित्य नीतिशाली ने छायावाद की झलक देखी और सराहा। पाण्डेय जी ने श्री शारदा प्रक्रिया में विस्तार से प्रकाश ढाला जो उनके चिंतन और अध्ययन की अमूल्य निपिधि है। छायावाद के प्रवर्तक कवि उन्हें माना जाता है पर वे विनाश्तावृद्धक कहते हैं कि “मेरी रचनाओं में चाहे लोग जो भी खोज ले पत्तनु वे विश्वव्युद्ध रूप से मेरी रचनाओं पर आंतरिक सहमत अधिव्यक्ति मारते हैं। उनमें न तो कोट्पन्न की ऊँची उड़ान है न विचारों की उड़ान, न भावों की उड़ान। उनमें उर्ध्व की चूलुलाहट या बांकपन भी नहीं। वह सरल सहज उड़ाना मात्र है।”

पिंडत मुकुटधर पाण्डेय ने “हिंदी में छायावाद” नामक नियंथ के माध्यम से ‘छायावाद’ का प्रवर्तन किया। पाण्डेय जी का पद्य और गद्य दोनों में समान अधिकार है। उनकी रचनाओं की सूची प्रस्तुत है—

1. पूजाफूल (काव्य संग्रह)-ब्रह्म प्रेस, इटावा : 1916
 2. शैलबाला (अनुरित उपन्यास)-हरिदास एंड कंपनी कलकत्ता, 1916
 3. परिश्रम (नियंथ संग्रह)-हरिदास एंड कंपनी कलकत्ता : 1917
 4. लच्छा (अनुरित उपन्यास)-हरिदास एंड कंपनी कलकत्ता : 1917
 5. हृष्यदान (कहानी संग्रह)-गल्पमाला, बनारस : 1918
 6. मामा (अनुरित उपन्यास)-रिखदास वाहिनी एंड कंपनी, उड़ीसा : 1924
 7. छायावाद एवं अन्य नियंथ-म.प्र. साहित्य सम्मेलन, भोपाल : 1979
 8. स्मृतिर्पुंज-तिरुप्ति प्रकाशन, हायुड : 1983
 9. विश्वबोध-श्री शारदा साहित्य सदन, रायगढ़ : 1984
 10. छत्तीसगढ़ी मेघदूत-(अनुरित काव्य)-छत्तीसगढ़ लेखक संघ, रायगढ़ : 1984
 11. हिंदी में छायावाद-तिरुप्ति प्रकाशन, हायुड : 1984
- पिंडत मुकुटधर पाण्डेय जी से संबंधित अनेक संपादित पुस्तकों में प्रमुख हैं—
1. मुकुटधर पाण्डेय : व्यक्ति एवं रचना-सं-महावीर अग्रवाल, श्री प्रकाशन, हुर्दा (छ.ग.) : 2001
 2. पिंडत मुकुटधर पाण्डेय चयनिका-छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी, रायपुर : 2007
- पिंडत मुकुटधर पाण्डेय जी के काव्य सरल और सहज है। उनमें अंतः सौंदर्य और आध्यात्मिक भावनाओं की प्रमुखता है जो छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषता है। उनके पास एक सरल अनुभूति जिजासायें हैं, शब्दों का झाड़प्पर नहीं है। कबीरदास की भाति वे लिखते हैं—

यह दुनिया बाजार रूप है,

लोग बाजारी हैं भाई।

काम, क्रोध, मद, लोभ जनति है

वस्तु यहाँ बिकने आई।

दृष्टिकोण

कवि को ईश्वरीय सत्ता का आभास परितों के दुख में दीन-हीन के अशु नीर में, कृपक के हल में और कवि के काव्य में मिलता है -

“दीन हीन के अशु नीर में
परितों के परिताप पीर में
सरल स्वभाव कृपक के हल में
परिवर्ता रमणी के बल में
श्रम सोकर से सिंचित थान में
तेरा मिला प्रमाणा” - विष्वबोध

छत्तीसगढ़ को मिट्टी से उन्हें विशेष अनुराग था। यहाँ की प्राकृतिक सौंदर्य नदी-पहाड़, पश्च., पक्षी से लगाव था। महानदी कविता की पक्षियाँ प्रस्तुत हैं -

“कितना सुन्दर और मनोहर महानदी यह तेरा रूप
कलकल मय निर्मल, जलधारा, तहरों की है छट्य अनूप
तुझे देखकर शैरव की सृष्टियाँ तंर में उठती जाए
लेता है कैशोर काल का अंगड़ाई अल्लंड़ अनुरागा” - महानदी

पाण्डेय जी के काव्य संग्रह पूजापूल में महानदी ग्राम गुणान, फूल, गुलाब, प्रभात, संध्या छहुओं का वर्णन आदि प्रकृति परक कविताएँ हैं। प्रकृति के प्रति कवि की गहरी आत्मीयता है -

“हरित पत्तल्यित नववृक्षों के दृश्य मनोहरा।
होते मुश्कों विज्ञ बोच है जैसे सुखकरा।
सुखकर वैसे अन्व दृश्य होते न कभी हैं।”

उनके आगे तुच्छ परम वे मुझे सभी हैं।” - मेघ प्रकृति प्रेम

ग्राम्य जीवन का वर्णन करते हुए कवि ने प्रायः परनथ और पनिहारियों का वर्णन किया है। इस प्रसंग में पाण्डेय जी ने सहज मावों को ही अधिव्यक्ति दी है :

“पनिहारिन पानी लेने को,
पक्षित बाँध कर जाती है।
सिर पर नीर पूर्ण मिट्टी के,
कलरे ले-ले आती हैं।”

यंत्रि के समय कुररी के करूण विलाप को सुनकर पाण्डेय जी का इद्य करूणा से भर उठा। मन ही मन 'कुररी के प्रति' काव्य की रचना कर डाली। 'कुररी के प्रति' हिंदी काव्य साहित्य की एक ऐसी अमर रचना है जिसने युग निर्माण का कार्य किया है। पटुमलाल एनालाल बछरी ने 'हुररी के प्रति' रचना को प्रथम छायावादी काव्य माना है। पक्षित प्रस्तुत है -

“बता मुझे ऐ विहग विरेशी अपने जी को बात
पिछड़ा था तु कहन, आ रहा जो कर इतनी राता” - हुररी के प्रति

गद्य और पद्य दोनों में पाण्डेय जी का समान अधिकार है। हिंदी के अतिरिक्त संस्कृत, उड़िया, बंगला और अंग्रेजी भाषा का भी ज्ञान था। उनको प्रकाशित गद्य है - 'पूजापूल', 'शैलबाला', 'मामा', 'लच्छमा', 'परिश्रम' और 'हृदयदात' है। उन्होंने महाकवि कालिदास की कालजयी कृति 'मेघदूतम्' का छत्तीसगढ़ी में भावपूर्ण अनुवाद किया। जो छत्तीसगढ़ी भाषा के संवर्धन और विकास में मोत के पत्थर सिद्ध होते हैं। कथा के प्रारंभ में कहा गया है -

दृष्टिकोण

“यक्ष एक हर अपन काम मा

गलती कहु कर डार्सि

तव कुम्हे हर शाप छोड़ अतका ले
ओता निकारिसा”

- मेघदूत (छत्तीसगढ़ी)

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय काव्य चर्चा के दौरान कालिदास, भवपूति, तुलसीदास, कबीर, मीरा, सूदास, शेली, मेटरिन्क, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, माइकेल मधुसूदन दत्त, फकीर मोहन सेनापति, मिर्जा गालिब के जीवन से लेकर उनके साहित्य की चर्चा करते थे। अपने समकालीन कवियों में ऐथलीशरण गुल और प्रसादजी की चर्चा करते थे। महाकवि कालिदास और तुलसीदास उनके सबसे प्रिय कवि हैं। 'अमिजान शाकुन्तलम्' और 'विनय पत्रिका' उनके सर्वाधिक प्रिय ग्रंथों में से हैं। पाण्डेय जो महात्या गोंधी जी के विचारों से प्रभावित थे। गोंधी पर वे लिखते हैं -

“तुम शुद्ध बुद्ध की परम्परा में आये

मानव थे ऐसे, देख की देव लजाये

भारत के ही वर्यों, अखिल लोक के प्राप्ता

तुम आये बन दलितों के भाग्य विधाता।”

- गांधी के प्रति

इस प्रकार पाण्डेय जी के साहित्य में भाषा को अपनी संस्कृति और संवेदनात्मक कर्जा के अमृत संसार को व्यक्त करने की विद्यात्मक रचना, भावात्मक तथ्यों को अभिय्वक्तव्य करने वाल भावकीर्तिका, संवेदना की तीव्रता को प्रेशित करने वाली प्रतीकात्मकता उसने प्रदान की है। भाषा के प्रति परंपरागत वस्तु दृष्टि के बंधनों को तोड़कर उसने अपनी भाव दृष्टि से वस्तु को नए रूप में प्रस्तुत किया। शब्दों का अर्थ, भावबोध और संवेदना के नवीन संस्कारों के अनुरूप ढालने को एकाग्र कौशिश पण्डित मुकुटधर पाण्डेय ने किया। इसके लिए हिंदी साहित्य जगत में वे सर्वैव प्रासारित होंगे। अपने देशकाल के परिवर्तित जीवन संर्भाओं, आशा, आकाशाओं और यथार्थ के बदलते सरागम के अनुरूप एक नयी सामाजिक और विश्व दृष्टि से विकसित करने को भरसक कीचित्र की है।

निष्कर्ष :

व्यक्ति स्वातंत्र्य और रुद्धियों से विद्रोह की भावना ने पाण्डेय जी को अपना एक निजी और वैयक्तिक मुहावरा तत्त्वाज्ञ करने के लिए प्रेरित किया था, वह अपनी रणनीति में नितान व्यक्तिगत, व्यक्तिनिष्ठ और व्यक्तिगती होता गया। पाण्डेय जी के साहित्य आधुनिकता के सारे प्रतिमानों पर खोरी उत्तरी है और वह पूर्ण रूप से आधुनिक है। इसलिए वह सर्वैव प्रासारित होंगे। नायकर सिंह जी का छायावाद के परिणाम में कथन है - “छायावाद उस राष्ट्रों ये जागरण की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है जो एक और पुण्यो रुद्धियों से मुक्ति चाहता है और दूसरी ओर विदेशी पराधीनता से।” नायकर सिंह ने मुक्ति को केन्द्र में रखा और स्वाधीनता को बात कीड़ी। रुद्धियों समाज को कमजोर बना दी थी विदेशी पराधीनता अर्थात् अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति। इन सामाजिक तथ्यों के माध्यम से वे 'छायावाद' को युग संदर्भ से जोड़ते हैं।

पाण्डेय जी के काव्य में प्रकृति के माध्यम से मानव की स्वतंत्रता की ओर संकेत करते हैं ज्योकि प्रकृति के सारे उपादान पर्वत, नदी, झरने, पेड़-पौधे, चिड़ियाँ, सूर्य का प्रकाश, जल, वायु आदि स्वतंत्र हैं, इन्हें कोई गुलाम नहीं बना सकता है।

‘हिंदी में छायावाद’ और ‘कुररी’ जैसी अमर ऐतिहासिक रचना का सुजन कर 6 नवम्बर 1989 ई. को पंचतत्त्व में वित्तीन हो गये। जीवन के अतिम शण के संबंध में पाण्डेय जी की निन पक्षियाँ उल्लेखनीय हैं-

दृष्टिकोण

“जीवन की संधा में अब तो है केवल इतना मन-काम

अपनी ममतापयी गोद में, दे मुझको अतिम विश्राम॥

चित्रेत्पले, बता तू मुझको वह दिन सचमुच कितना दूर।

प्राण प्रतीक्षात् लूटेंगे, मूर्तु पर्व का सुख भरपूर॥”

महानदी-।

खड़ी चोती हिंदी के विकास, उत्कर्ष में छायावाद और पण्डित मुकुटपर पाण्डेय के साहित्य की प्रारंगकता सदैव बनी रहेगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची -

1. पण्डित मुकुटपर पाण्डेय चर्यनिका, (प्रस्तावना से) प्रो. दिनेश पाण्डेय डॉ. विहारी लाल साहू,
2. साहित्य-वेदाण, विनय भोजन शर्मा; पृ. क्र. 14-15।
3. छायावाद और मुकुटपर पाण्डेय, सं. डॉ. बलदेव साह; पृ. क्र. 136।
4. पण्डित मु. पा. चर्यनिका, (प्रस्तावना से) सं. प्रो. दिनेश पाण्डेय डॉ. विहारी लाल साहू।
5. छायावाद और मुकुटपर पाण्डेय, संपादक डॉ. बलदेव साह; पृ. क्र. 138।
6. पण्डित मु. पा. चर्यनिका, संपादक प्रो. दिनेश पाण्डेय डॉ. विहारी लाल साहू; प. क्र. 139।
7. पण्डित मु. पा. चर्यनिका, संपादक प्रो. दिनेश पाण्डेय डॉ. विहारी लाल साहू; पृ. क्र. 151।
8. मुकुटपर पाण्डेय व्यक्ति एवं रचना, संपादक महावीर अग्रवाल (विनय पाठक आलेख); पृ. क्र. 93।
9. मुकुटपर पाण्डेय व्यक्ति एवं रचना, संपादक महावीर अग्रवाल (विनय पाठक आलेख); पृ. क्र. 95।
10. मुकुटपर पाण्डेय व्यक्ति एवं रचना, संपादक महावीर अग्रवाल; पृ. क्र. 75।
11. मुकुटपर पाण्डेय व्यक्ति एवं रचना, (छायावाद सेल नामकर सिंह); पृ. क्र. 177।

छायावाद और मुकुटधर पाण्डेय के साहित्य की प्रासंगिकता

शोध निर्देशक

डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति
विनागाव्याख्या, हिंदी विनाग
पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुकुट)
विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़ विलासपुर

शोधार्थी एवं प्रस्तुतकर्ता

बीरुल लाल बरगाह
साहायक प्राच्याधापक हिंदी
राजीव गांधी शास्त्र, महाविद्यालय
सिमगा, जिला बलौदाबाजार (छ.ग.)

वीसठी शताब्दी की महान विद्युतियों में से एक पदवश्री साहित्य वाचस्पति पण्डित मुकुटधर पाण्डेय जी संक्रमण काल के सर्वाधिक सामर्थ्यवान कवियों में अग्रगण्य है। द्वितीय और छायावादी युग के बीच की एक महत्वपूर्ण कड़ी पाण्डेय जी की काव्य यात्रा को समझे जिना खड़ी बोली हिंदी के विकास को सही ढंग से नहीं समझ सकते हैं। डॉ. बलदेव जी का हृत है 'पाण्डेय जी ने द्वितीय युग के शुक्र उद्यान में नूतन शूर भरा तथा नवंवंसत की अगुवाई कर युग प्रवर्षन का ऐतिहासिक कार्य किया।'¹ पाण्डेय जी के काव्य में द्वितीय एवं छायावादी युगीन काव्य की सभी विशेषताएं परिलेखित होती है। एक ओर उनके काव्य में द्वितीय युग के महान आदर्श जिसमें लोकहित प्रमुखता से अभियक्त होता है, तो वहीं दूसरी ओर अंतरिक सुन्दरता, सूक्ष्म चित्रण, किंतु वस्तु या प्रकृति का असाधारण चित्र आदि छायावादी विशेषताएं दृष्ट्य होती हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि पाण्डेय जी के काव्य लेखन में स्वच्छेतावाद और आदर्शवाद जैसी दो विशेषी प्रवृत्तियाँ देखने को मिलती हैं। पाण्डेय जी सर्वप्रथम काव्य की उन्मुख हुए, उसके पश्चात वे विचारक, साहित्य समीक्षक, अनुवादक और गद्य साहित्य लेखक के रूप में प्रसिद्ध हुए। उनकी कुरुरी के प्रति रचना को पदमालाल पुनालाल लखी जी ने प्रथम छायावादी कविता के रूप में स्वीकार किया।

छायावाद कहते ही एक ऐसे समय का योग होता है कि उस समय के केन्द्र में छाया हो। छायावाद का समय 1918-1936 ई. तक मानी जाती है। उस समय जो काव्यांदीन बता उसे हिंदी में छायावाद कहते हैं। हिंदी साहित्य का स्वर्णयुग भक्तिकाल को माना जाता है और आधुनिक हिंदी (खड़ी बोली) का स्वर्णयुग छायावाद को माना जाता है। पण्डित मुकुटधर पाण्डेय ही 'छायावाद' के प्रवर्तक हैं।

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय जी का जन्म 30 जितान्वर सन् 1895 ई. को विलासपुर जिला वर्तमान में जांगीरी-चाना जिले के गालपुर नामक ग्राम में हुआ था। महानदी के तट प्रदेश में वसा यह गाँव रायगढ़ सरांगदार मार्ग पर चन्दपुर के पूर्व दिशा में रित्थ है। महानदी के पुल से देखने पर घनी अमराइयों से झाँकता हुआ गालपुर गाँव मानों प्रकृति यी गोद में बैठा हुआ सा प्रतीत होता है। महानदी की सुन्दरता पर मुध होकर पाण्डेय जी लिखते हैं -

'कितना सुन्दर और मनोहर, महानदी यह तेरा रूप।'

कलकल भय निर्मल जलधारा; लहरों की है छठा अनूप।'

महानदी-1

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय ने सन् 1920 ई. में जबलपुर मध्यप्रदेश से निकलने वाली पत्रिका 'श्रीशारदा' में हिंदी में छायावाद शीर्षक से चार निवंशों की एक लेखमाला छपवाई। इन चारों निवंशों में पांच शास्त्रों की ओर ध्यान इगत किया है जिसमें वैयक्तिकता, स्वातंत्र्य वोध, रहस्यवादिता, शैलीगत वैशिष्ट्य और अस्पष्टता।

'छायावाद' का नामकरण पण्डित मुकुटधर पाण्डेय जी ने किया है। डॉ. विनय मोहन शर्मा को एक पत्र में लिखा है - 'छायावाद नाम सर्वथा मेरा गदा हुआ है और मैंने परोक्ष सत्ता के प्रति अस्पष्ट रूप से व्यक्त भावों की रचना के लिए इसे प्रयुक्त किया था।'² कुरुरी के प्रति रचना के बारे में उनका कहना है - 'रात्रि में कुरुरी के कलण स्वर सुनकर विसर्ता पर पड़े पड़े मैंने मैं ही कुरुरी के प्रति की रचना कर दाती। तब मुझे आशर्य हुआ कि छायावाद लिखा नहीं जाता, अनुभूति द्वारा अपने आप ही लिखा जाता है।'

श्रीशारदा 1920 में दूसरा तेरा है छायावाद क्या है? प्रारंभिक पंक्तियों हैं हिंदी में यह विल्खन नया शब्द है। अंग्रेजी या पश्चात्य साहित्य अथवा वेंग साहित्य की वर्तमान स्थिति की कुछ भी जानकारी रखने वाले समझ जाएंगे कि यह शब्द Mysticism के लिए आया है।³

मुख्योपीय पुनर्जागरण की गुरुआता इटली में हुई है। इसी प्रवाह भारतीय पुनर्जागरण की गुरुआत बंगल में। बंगल में ईसाई संतों द्वारा ईश्वर की प्रार्थना करते समझ उहें अपने ऊपर ईश्वर की छाया का आभास होता था जिसे फैन्टेसमाटा (fantasmata) कहते हैं। इस तरह की आध्यात्मिक छाया का भाव अनुभूति रखीन्द्रनाथ टैगोर की उनकी कृति 'शीतांजलि' के लिए सन् 1913 ई. में साहित्य का प्रथम नोबल पुलिकार मिला और हिंदी के कवियों ने रखीन्द्रनाथ टैगोर की कविताओं का अनुकरण किया। तत्पश्चात् 'छायावाद' नाम से आंदोलन चल पड़ा।

छायावाद विषयक लेखमाला से पहले मार्च 1920 ई. हितकारिणी पत्रिका में छायावाद की संक्षिप्त परिचया 'चरणप्रसाद' नामक कविता में दी है -

"भाषा वया वह छायावाद

है न कहीं उसका अनुवाद"⁴

छायावाद शब्द का प्रथम प्रयोग सन् 1920 ई. के आसपास 'द्वितीय युग के वयोवृद्ध साहित्यकारों और आलोचकों ने निदा या धृणा के भाव से नहीं 24-25 वर्ष के एक अधकचरे नवयुवक ने सद्मावना पूर्वक किया था।⁵ ये नवयुवक और कोई नहीं स्वयं मुकुटधर पाण्डेय जी थे।

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय और छायावादी काव्य की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि उसने खड़ी बोली हिंदी को आधुनिक भाववोध से युक्त रवानात्मक और समृद्धशाली काव्यभा बनाने की पहल की। हिंदी में 'छायावाद' निवंश के प्रथम निवंश 'कवि स्त्रांत्र्य' में पाण्डेय जी ने रीति ग्रंथों की परतंत्रता से मुक्त होकर काव्य में व्यक्तित्व तथा भाव, छन्द, भाषा के प्रकाशन रीति में मौलिकता की आवश्यकता पर जांच दिया है।

'छायावाद' एक ऐसी मायामय सूक्ष्म वस्तु है कि शब्दों द्वारा उसका ठीक-ठीक वर्णन करना असंभव है। शब्द अपने स्वामाविक मूल्य खोकर सांकेतिक चिन्ह मात्र तुकरते हैं।⁶

छायावाद के कवि वस्तुओं को असाधारण दृष्टि से देखते हैं। उनकी रचना की सम्पूर्ण विशेषताएं उनकी इस दृष्टि पर आधारित रहती है, वह क्षम्भर में दस्तुओं को बिजली की तरह स्पर्श करती हुई निकल जाती है। अतिथरता और क्षीणता के साथ उसमें एक तरह की विचित्र उन्मादकता और अंतरंगता होती है जिसके कारण वस्तु उसके प्राकृतिक रूप से मिलन रूप में दिखाई पड़ती है। यह अंतरंग दृष्टि ही छायावाद की विचित्र प्रकाशन रीति का मूल है। उसमें किसी वस्तु या दृश्य का ज्यों का त्वयं चित्र तिया जाता है पर शब्द ऐसे वेगयुक्त होते हैं कि भाषा उड़ती हुई जान पड़ती है। ऐसी रचनाओं में शब्द अपने वास्तविक मूल्य खोकर सांकेतिक चिन्ह मात्र होते हैं।

इस प्रकार मुकुटधर पाण्डेय जी की सूक्ष्म दृष्टि ने छायावाद के मूलभावना आल्टनिट अन्तर्दृष्टि को पहचान लिया था। निवंश हिंदी में 'छायावाद' इस निवंश के मायामय से छायावाद पर लगाये गये अस्पष्टता आदि आरोपों का खण्डन करते हुए लिखते हैं - 'छायावाद की आवश्यकता हम इसलिए समझते हैं कि उससे कवियों को भाव प्रकाशन का एक नया मार्ग मिलेगा। इस प्रकार के अनेक मार्गों अनेक रीतियों का होना ही उन्नत साहित्य का लक्षण है।'

मुकुटधर पाण्डेय की रचनाओं में मन के वंधन की पीड़ा की अभियक्ति है जो स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए छपटा रही है। काव्य स्वातंत्र्य में पाण्डेय जी के शब्द ही संसार में प्रत्येक मनुष्य स्वतंत्रता चाहता है, फिर भी उसे मानसिक भूमि में परतंत्र रहना व्यांग पसंद होता यह वात समझ में नहीं आती।

डॉ. नामवर सिंह का कथन है - 'छायावाद का ऐतिहासिक एवं तात्परिक विवेदन छायावाद पर पहला निवंश होने के साथ ही एक अत्यन्त सुशब्दा प्रभावशाली समीक्षा भी है। इस निवंश का महत्व ऐतिहासिक ही नहीं, स्थायी भी है।'⁷ पाण्डेय जी ने भावों की छाया या अस्पष्ट-अप्रत्यक्ष स्वरूप के लिए सांकेतिक अभियक्ति हेतु छायावाद नाम सुझाया। ये छायावाद की विलस्ता को सरल बनाकर जन सामान्य में लोकप्रिय बनाने के पक्षपाती रहे। पाण्डेय जी के 'कविता शीर्षक निवंश' काव्यादर्श और छायावाद के पर्याय को प्रमाणित करते हैं। ये काव्य में लोकार्थों की सरसता या श्रम-शक्ति का समावेश करते थे। उनका ध्यान गाँव में काम करने वाले गरीब किसानों, मजदूरों की ओर गया। उन्होंने श्रम की महिना गाई -

"धन्य तुम शारीण विश्रान
सरलता, प्रिय औदार्य निधान
छोड़ जन रंगुल नगर निवास
विद्या वयों विजन ग्राम में गेह
नहीं प्रारादों की कुछ चाह
कुटीरों से वयों इतना नेह।"

—किरान

पाण्डेय जी काव्यकला को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि — हृदयग्राही भाषा वित्र का नाम ही काव्य है, कविता प्रभावोत्पादक और मनोरंजक होती है। रौदर्य वर्णन के सिवाय कविता में कुछ ऐसी विशेषता होनी चाहिए कि उसके पाठ से सर्वत्र ईश्वरीय भाव अथवा एक अद्वैत शक्ति या किसी अखण्ड नियम की व्यापकता या प्राप्तनता हो। साथ ही ये कहते हैं कि मानव जीवन का प्रयाव जब आध्यात्मिक भावों के समूह में जाकर लीन हो जाता है, तब वह अपने अंतिम लक्ष्य पर पहुँच जाता है।

प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् भारतीय जनता निराशा के सामने ढूँढ़ रही थी। विदिशा सत्ता के अत्याधार के कारण कवियों में अंसतोष और विदोह के भाव थे, ये इसे व्यक्त करने में असमर्थ रहे। इस संक्षमण काल में कविता शीर्षक नियंत्रण के अंतर्गत पाण्डेय जी ने नवयुक्त कवियों को प्रोत्साहित करते हुए लिखा है — “हमारे कवि और लेखक इस ओर संघेट हैं और ये देश की आवश्यकता को समझकर जन जागरण, एकता वीरता और स्वतंत्रता आदि के भाव बराबर फैला रहे हैं। यह बहुत ही शुभ लक्षण हैं और यीश्वरी ही अभीष्ट फल की प्राप्ति होगी।”⁹

देश की दुर्दशा पर चिंता व्यक्त करते हुए कवि आर्य सन्तानों को जागृत करने का संकल्प लेते हैं। उठो घेतो की यह पंक्तियाँ उत्स्तेखनीय हैं :

“उठो हे आर्य सन्तानों, सधेरा हो छुका प्याह।
समय यह है न सोने का तजो आलरय को भाई।
लगो कर्त्तव्य में अपने भगे दारिद्र्य दुःखदाई।
उदय हो सौख्य सूरज का गगन में लालिमा छाई।”

—उठो घेतो

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय की रथनाओं में साहित्य मनीषियों ने छायावाद की झलक देखी और सराहा। पाण्डेय जी ने श्री शारदा पत्रिका में विस्तार से प्रकाश डाला जो उनके चिंतन और अध्ययन की अनुल्य निहि है। छायावाद के प्रवर्तक कवि उन्हें माना जाता है पर ये विनिग्रहात्मक कहते हैं कि “मेरी रचनाओं में चाहे लोग जो भी खोज से परन्तु ये विशुद्ध रूप से मेरी रचनाओं पर आंतरिक सहभज अभिव्यक्ति मात्र है। उनमें न तो कल्पना की ऊँची उड़ान है न विचारों की उलझान, न भावों की दुरुहता। उनमें उर्दू की चीजों की चुलबुलाहट या बांकपन भी नहीं। वह सरल सहज उद्गार मात्र है।”¹⁰

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय ने हिंदी में ‘छायावाद’ नामक नियंत्रण के माध्यम से ‘छायावाद’ का प्रर्वतन किया। पाण्डेय जी का पद्य और गद्य दोनों में समान अधिकार है। उनकी रथनाओं की सूची प्रस्तुत है —

- 01) पूजाफूल (काव्य संग्रह) — बहम प्रेस, इटावा : 1916
- 02) शैलवाल (अनूदित उपन्यास) — हरिदास एंड कंपनी कलकत्ता, 1916
- 03) परिश्रम (नियंत्रण संग्रह) — हरिदास एंड कंपनी कलकत्ता : 1917
- 04) लच्छमा (अनूदित उपन्यास) — हरिदास एंड कंपनी कलकत्ता : 1917
- 05) हृदयदान (कहानी संग्रह) — गल्पमाला, बनारस : 1918
- 06) माना (अनूदित उपन्यास) — रिखवादास वाहिनी एंड कंपनी, उड़ीसा : 1924
- 07) छायावाद एवं अन्य नियंत्रण — म.प्र. साहित्य सम्मेलन, भोपाल : 1979
- 08) स्मृतिपुँज — तिरुपति प्रकाशन, हापुड़ : 1983
- 09) विश्ववोध — श्री शारदा साहित्य सदन, रायगढ़ : 1984

- 10) प्रार्थिरामकी मैत्रादृष्टि — (अनूदित काव्य) — प्रार्थिराम सेवक राम, रायगढ़ : 1984
- 11) हिंदी में शायावाद — विस्तारित प्रकाशन, हापुड़ : 1984

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय जी से संबंधित अनेक संपादित पुस्तकों में प्रमुख हैं —

- 01) मुकुटधर पाण्डेय : यात्रा एवं रथगा — श्री. गवांगीर आगाम, श्री प्रकाशन, हूर्दा (इ.ग.) : 2001
- 02) पण्डित मुकुटधर पाण्डेय चायनिङ — प्रार्थिराम सेवक हिंदी चूंच अकादमी, रायगढ़ : 2007

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय जी के काव्य सारल भीर साहज है। उनमें जीतः रीदर्य और आध्यात्मिक भावनाओं नीं प्रमुखता है जो शायावादी काव्य की प्रमुख विशेषता है। उनके पास एक सारल अनुभूति विद्वानामें है, शब्दों का आवार नहीं है। कवीराम की गति ने लिखते हैं —

गह दुनिया गाजार रुप है,
लोग बाजारी है भाई।
गाम, गोप, गद, लोग जानते हैं
परतु गहरे गिरने आई।

कवि ने ईश्वरीय राता या आगाम परितों के भुख में दीन-दीन के अमृ नीर में, शूक्र के छल में और कवि के काव्य में विलता है —

“दीन दीन के अमृ नीर में
परितों के परिताप पीर में
सारल रथगाय शूक्र के छल में
परिवार रमणी के गल में
श्रग शीकर से रिधिता पन में
तेरा गिला प्रमाण।”

— विश्ववोध

प्रतीरामद की मिदीरी से उन्हें पिशेष अनुराग था। यहाँ की प्राकृतिक रीदर्य नदी-पहाड़, पशु, पक्षी से लगाव था। नहनदी कविता की पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं —

“कितना बुनदर और भनोहर भहानदी यह तेरा रुप
कल्पल भय निर्गत, जलधारा, लहरों की है छटा अनुप
तुझे देखवार बैगय भी सृष्टियों उर में उठती जाग
लेता है फैशर काल का अंगराई अलड़ अनुराग।”

— नहनदी

पाण्डेय जी के काव्य संग्रह पूजाफूल में गहानदी ग्राम गुण्डाग, पूर्णा, गुलाम, प्रगता, रांचा पटवार्हुओं का वर्णन आदि प्रकृति परक कविताएँ हैं। प्रकृति के प्रति कवि ने गहरी आत्मीयता है —

“हरित पत्त्वित नववृक्षों के दृश्य गनोहर।
झोते गुदाने पिश बीम है जैरों गुण्डाम।
गुखवार जैरों अन्य दृश्य होते न कही है।
उनके आगे गुम्फ परा वे गुम्फ रानी हैं।”

— मेरा प्रकृति प्रेम

ग्राम चीजें गग वर्णन करते हुए कवि ने प्रायः फाराट और पनिलारिनों गग वर्णन किया है। इस प्रसंग में पाण्डेय जी ने सरज भावों ने भी अभिव्यक्ति दी है :

‘परिवारिन पानी सेंगे गो,
पंति धौप बर जाती है।
सिर पर नीर पूर्ण गिरदी गे,
गलते से-ते आती है।।’

रात्रि के समय कुररी गे करुण विलाप को सुनकर पाण्डेय जी का हृदय कलणा से भर उठा। मन ही मन कुररी के प्रति काव्य की रचना कर आती। कुररी के प्रति हिंदी काव्य साहित्य की एक ऐसी अमर रथना है जिसने युग निर्माण का कार्य किया है। पदुमलाल पुन्नालाल यज्ञी ने कुररी के प्रति रथना को प्रथम छायावादी काव्य बना है। पंक्ति प्रस्तुत है –

‘बता मुझे ऐ विटांग विदेशी अपने जी की बात
पिछड़ा था तू कहां आ रहा जो कर इतनी रात।’
– कुररी के प्रति

गद्य और पद्य दोनों में पाण्डेय जी का समान अधिकार है। हिंदी के अतिरिक्त संस्कृत, उडिया, बंगला और अंग्रेजी भाषा का भी ज्ञान था। उनकी प्रकाशित गद्य है – ‘भूजपूर्ण’, ‘शैलवाला’, ‘माया’, ‘लघ्वामा’, ‘परिश्रम’ और ‘हृदयदान’ है। उन्होंने महाकवि कालिदास की कालजयी कृति ‘मेपटूरम्’ का छतीसगढ़ी में भावपूर्ण अनुवाद किया। जो छतीसगढ़ी भाषा के संवर्धन और विकास में मील के पत्थर सिंह होते हैं। कथा के प्रारंभ में कहा गया है –

‘एक एक हर अपन काम मा
गलती काषु कर लारिस
तब कुपेर हर शाप छोड़ अलका ले
ओला निकारिस।’

– मैथदूत (छतीसगढ़ी)

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय काव्य चर्चा के दोरान कालिदास, भवभूति, तुलसीदास, कवीर, मीरा, सूरदास, शेखी, मैटरलिंक, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, माझेल मधुसून दत्त, फलीर मोहन सेनापति, निर्जन गालिब के जीवन से लेकर उनके साहित्य की चर्चा करते थे। अपने समकालीन कवियों में मैथियाशरण युवा और प्रसादजी की चर्चा करते थे। महाकवि कालिदास और तुलसीदास उनके सबसे प्रिय कवि हैं। ‘अभिज्ञान शाकुन्तलम्’ और विनय पत्रिका उनके सर्वाधिक प्रिय ग्रंथों में से हैं। पाण्डेय जी महात्मा गांधी जी के विचारों से प्रभावित थे। गांधी पर वे लिखते हैं –

‘तुम शुद्ध बुद्ध की परम्परा में आये
मानव थे ऐसे, देख की देव लजाये
भारत के ही यथो, अखिल लोक के भ्राता
तुम आये बन दलितों के भाग्य विधाता।’

– गांधी के प्रति

इस प्रकार पाण्डेय जी के साहित्य में भाषा को अपनी रसायनिकता और संवेदनात्मक ऊर्जा के अमृत संसार को व्यक्त करने की विस्मानिक रचना, भावात्मक तथ्यों को अभिव्यक्त करने वाल संकेतिका, संवेदना की तीव्रता को प्रेषित करने वाली प्रतीकात्मकता उसने प्रदान की है। भाषा के प्रति परंपरागत बहुत दृष्टि के बंदों को तोड़कर उसने अपनी भाषा दृष्टि से बहुत जो नए रूप में प्रस्तुत किया। शब्दों का अर्थ, भावयोग्य और संवेदना के नवीन संस्कारों ये अनुलूप दालने की एवग्राम कोशिश पण्डित मुकुटधर पाण्डेय ने किया। इसके लिए हिंदी साहित्य जगत में वे सदैव प्रारंभिक रहे हैं। अपने देशकाल के परिवर्तित जीवन संदर्भों, आशा, आकंक्षाओं और यथार्थ के बदलते सरगम के अनुरूप एक नयी सामाजिक और विश्व दृष्टि से विकसित करने की भरतीय कोशिश की है।

व्यक्ति स्वातंत्र्य और लड़ियों से विदोष की भावना ने पाण्डेय जी को अपना एक निजी और वैयक्तिक मुहावरा तलाश करने के लिए प्रेरित किया था, वह अपनी रणनीति में नियांत्रित व्यक्तिगत, व्यक्तिनिष्ठ और व्यक्तिगती होता गया। पाण्डेय जी के साहित्य आनुभिकता के सारे प्रतिमानों पर खड़ी उत्तरती है और यह पूर्ण रूप से आधुनिक है। इसलिए यह सदैव प्रारंभिक रहेगा। नामगर सिंह जी का छायावाद के परिपेक्ष्य

में गढ़न है – “छायावाद उस राष्ट्रीय जागरण की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है जो एक और मुरारी स्लिंगों से युक्त गाढ़ा है और मूरारी और विदेशी परापीनता से।”¹¹ नामगर सिंह ने मुक्ति को फेन्ड में रखा और स्वाधीनता जी बात बनी। लड़ियों राजग जो बगवार बना रही थी विदेशी परापीनता अर्थात् अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति। इन सामयिक तथ्यों के माध्यम से ये ‘छायावाद’ जो गुप्त संदर्भ से जोड़ा गया है।

पाण्डेय जी के काव्य में प्रकृति के माध्यम से मानव की स्वतंत्रता की ओर संकेत करते हैं यद्योगि प्रस्तुति फे रारे उपादान पर्वत, नदी, झरने, पेड़-पौधे, धिन्डियों, सूर्य का प्रकाश, जल, यातु आदि स्वतंत्र हैं, इन्हें कोई गुलाम नहीं बना सकता है।

हिंदी में छायावाद और ‘कुररी’ जैसी अमर ऐतिहासिक रचना का सृजन कर 6 नवम्बर 1989 ई. को पंचांत्रत्य में पिलोन हो गये। जीवन के अंतिम क्षण के संबंध में पाण्डेय जी की निनं परित्यार्थी उल्लेखनीय है –

‘जीवन की संयोग में अब तो है केवल इतना मन-काम

अपनी ममतामयी गोद में, दे मुझको अंतिम विभ्राम ॥

धित्रोत्पले, बता तू मुझको वह दिन सचमुच बितना दूर ।

प्राण प्रतीकात्मक लट्टैगे, मृत्यु पर्व का सुख भरपूर ॥’

महाननदी-1

खड़ी बोली हिंदी के विकास, उत्कर्ष में छायावाद और पण्डित मुकुटधर पाण्डेय के साहित्य की प्रासंगिकता सदैव नहीं रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. पण्डित मुकुटधर पाण्डेय चर्यनिका, (प्रस्तावना से) प्रो. दिनेश पाण्डेय डॉ. विहारी लाल साहू।
2. साहित्यान्येषण, विनय मोहन शर्मा; पृ. क्र. 14-15।
3. छायावाद और मुकुटधर पाण्डेय, सं. डॉ. बलदेव साव; पृ. क्र. 136।
4. पण्डित मु. पा. चर्यनिका, (प्रस्तावना से) सं. प्रो. दिनेश पाण्डेय डॉ. विहारी लाल साहू।
5. छायावाद और मुकुटधर पाण्डेय, संपादक डॉ. बलदेव साव; पृ. क्र. 138।
6. पण्डित मु. पा. चर्यनिका, संपादक प्रो. दिनेश पाण्डेय डॉ. विहारी लाल साहू; पृ. क्र. 139।
7. पण्डित मु. पा. चर्यनिका, संपादक प्रो. दिनेश पाण्डेय डॉ. विहारी लाल साहू; पृ. क्र. 151।
8. मुकुटधर पाण्डेय व्यक्ति एवं रचना, संपादक महावीर अग्रवाल (विनय पाठक आलेख); पृ. क्र. 93।
9. मुकुटधर पाण्डेय व्यक्ति एवं रचना, संपादक महावीर अग्रवाल (विनय पाठक आलेख); पृ. क्र. 95।
10. मुकुटधर पाण्डेय व्यक्ति एवं रचना, संपादक महावीर अग्रवाल; पृ. क्र. 75।
11. मुकुटधर पाण्डेय व्यक्ति एवं रचना, (छायावाद लेख नामगर सिंह); पृ. क्र. 177।

छायावाद और पण्डित मुकुटधर पाण्डेय के साहित्य की उपयोगिता

शोध निर्देशक

डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति
विभागाध्यक्ष—हिंदी रिपोर्ट
पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुजरा)
विश्वविद्यालय छातीसागढ़, बिलासपुर

शोधार्थी एवं प्रस्तुतकर्ता

बीरुल लाल बरगाह
जहायक पाठ्यापक हिंदी
राजीव गांधी राज, महाविद्यालय
सिमगा, जिला बलौदायाजार (छ.ग.)
birulbargah@gmail.com

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय और छायावादी काव्य की सबसे महत्वपूर्ण उपलक्ष्य यह है कि उनमें खड़ी योली हिंदी यो अध्युक्त भावयोग से युक्त रचनात्मक और समृद्धशाली काव्याभाषा यन्मने की पहल यो। नाटक्य के क्षेत्र में प्रायः यह देखा गया है कि पूर्वर्ती युग के अभावों को पूर्ण करने के लिए पर्यार्ती युग का जन्म होता है। 'छायावाद' के मूल में भी यही स्थितान्त्रिकाम कर रहा है, क्योंकि द्विवेदी युगीन कविताएँ कारी उपदेश मात्र तह मर्ह। उसमें सनाज् सुधार की चर्चा आपक रूप से की जाती है, कुछ आख्यानों का ही विवरण मिलता है, इतिवृत्तात्मक, उपदेशात्मकता और नैतिकता योगी प्रवाननता के कारण कविता में निरसता आ गई, कार्यों या हृदय उस नीरसता से ऊब गया और कविता में सरसता लाने के लिए छटपटा उठे। इसके लिए छायावादी कवियों में काव्य 'वह' के स्थान पर 'मैं' शब्दी अपनायी। छायावादी कवियों ने काव्य की विषय वस्तु अपने जीवन से ही खोजने का प्रयास किया। अपने जीवन के निजी प्रसंगों, घटनाओं एवं व्यक्तिगत भावनाओं को अनेक छायावादी कवियों ने काव्य—वस्तु बनाया। मुकुटधर पाण्डेय जी की सूझ दृष्टि ने छायावाद की मूल भावना आत्मनिष्ठ अन्तर्दृष्टि को पहचान दिया। इन नीरसता से मुक्ति पाने के उन्होंने वैयक्तिक 'मुख—दुख, स्वयं की अनुभूति और उक्ति को मायम बनाया।

'वीसवीं शताब्दी' की महान विभूतियों में से एक पदमशी साहित्य वाचस्पति पण्डित मुकुटधर पाण्डेय जी संक्रमण काल के सर्वाधिक सामर्थ्यवान कवियों में अग्रणीय हैं। द्विवेदीयुग और छायावादी युग के बीच लो एक महत्वपूर्ण कड़ी पाण्डेय जी की काव्य यात्रा को समझे दिन खड़ी योली हिंदी के विकास को तभी ठंग से नहीं समझ सकते हैं। डॉ. वलदेव जी कहते हैं 'पाण्डेय जी ने द्विवेदीयुग के शुरु उद्घान में नूतन सूर भरा तथा नयंवंसत की अगुवानी कर युग प्रवर्तन का ऐतिहासिक कार्य किया।'¹ पाण्डेय जी के काव्य में द्विवेदी एवं छायावादी युगीन काव्य की सभी विशेषताएँ परिलक्षित होती हैं। एक ओर उनके काव्य में द्विवेदी युग के महान आदर्श जित्तमें लोकाछित प्रमुखता से अभियान होता है, तो वही दूसरी ओर आंतरिक सुन्दरता, सूम सिवण, किंतु वस्तु या प्रकृतों का असाधारण धृति आदि छायावादी विशेषताएँ दृष्ट्य होती हैं। इस प्रवार हम देखते हैं कि पाण्डेय जी के काव्य लेखन में स्वच्छातावाद और आदर्शवाद जैसी दो विरोधी प्राप्तियों देखने को मिलती है। पाण्डेय जी सर्वप्रथम काव्य की उन्मुख दृष्टि उसके प्रथम ये विचारक, साहित्य समीक्षक, अनुवादक और गदय साहित्य लेखक के रूप में प्रसिद्ध हुए। उनकी 'कुररी' के प्रति रचना को पदमलाल पुन्नालाल खड़ी जी ने प्रथम छायावादी कविता के रूप में स्वीकार किया।

छायावाद कहते ही एक ऐसे समय का गोप्ता होता है कि उस समय के केन्द्र में छाया हो। छायावाद का समय 1918—1936 ई. तक मानो जाता है। उस समय जो काव्यालोनन था उसे हिंदी में छायावाद गहरते हैं।

हिंदी साहित्य का खण्डित्य भागिकात को माना जाता है और अधुनिक हिंदी (खड़ी योली) का खण्डित्य 'छायावाद' को माना जाता है। पण्डित मुकुटधर पाण्डेय ही 'छायावाद' के प्रयत्नक हैं।

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय जी जा जन्म 30 सिताम्बर सन् 1895 ई. को बिलासपुर जिला चर्तमान में जांजगीर—चांपा जिले के बालपुर नामक ग्राम में हुआ था। महानदी के तट प्रदेश में बसा यह गांव रायगढ़ नामनदा मार्ग पर चन्दपुर के पूर्व दिशा में स्थित है। महानदी के पुल से देखने पर घनी अमराड़ीयों से झकिता हुआ बालपुर गांव मानो प्रकृति की गोद में बैठा हुआ सा प्रतीत होता है। महानदी की सुन्दरता पर मुम्ब हांकर पाण्डेय जी सिखते हैं—

"कितना सुन्दर और मनोहर, महानदी यह तेरा रूप।
कलकल मय निर्मल जलधारा; लहरों की है छटा अनुप ॥"

महानदी—1

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय ने सन् 1920 ई. में जलपुर मध्यप्रदेश से निकलने वाली पत्रिका 'श्रीशारदा' में 'हिंदी में छायावाद शीर्षक से चार निकंधों की एक लेखमाला छपवाई। इन चारों निकंधों में पाद गातों की ओर ध्यान इग्नित किया है जिसमें वैयक्तिकता, स्वातंत्र्य योग, रहस्यवादिता, शीलिगत वैशिष्ट्य और अरपट्टता।

'छायावाद' का नामकरण पण्डित मुकुटधर पाण्डेय जी ने किया है। डॉ. विनय मोहन शर्मा को एक पत्र में लिखा है— "छायावाद नाम सर्वथा भैरव गदा हुआ है और मैंने परेल ज्ञान के प्रति अत्यन्त रूप से व्याप्त भावों की रचना के लिए इसे प्रयुक्त किया था।"² कुररी के प्रति रचना के यारे में उनका कहना है— 'जाति' ने कुररी के करुण स्वर सुनकर विस्तर पर पड़े पड़े मैंने मन में ही कुररी के प्रति की रचना कर डार्सी; तब मुम्ब आशर्व दुखों के छायावाद लिखा नहीं जाता, अनुभूति द्वारा अपने आप ही लिख जाता है।'

श्रीशारदा 1920 में दूसरा लेख है 'छायावाद क्या है? प्रारंभिक पत्तियों हैं' हिंदी में यह विल्हुल नया शब्द है। अंग्रेजी या पाश्चात्य साहित्य अथवा दंग साहित्य की वर्तमान स्थिति की कुछ भी जानकारी रखने वाले समझ जाएंगे कि यह शब्द Mysticism के लिए आया है।³

यूरोपीय पुनर्जागरण की शुरुआत इटली में हुई है। इसी प्रकार भारतीय पुनर्जागरण को शुरूआत बंगाल में ईसाई संतों द्वारा ईश्वर की प्रार्थना करते समय उन्हें अपने ऊपर ईश्वर की छाया का आभास होता था जिसे फैन्टेस्माटा (fantasmata) कहते हैं। इस तरह की आध्यात्मिक छाया का भान अनुभूति रवीन्द्रनाथ टैगोर की कविताओं में दिखाई पड़ती है। रवीन्द्रनाथ टैगोर को उनकी कृति 'नीतांजलि' के लिए सन् 1913 ई. में साहित्य का प्रथम नोवल पुरुस्कार मिला और हिंदी के कवियों ने रवीन्द्रनाथ टैगोर की कविताओं का अनुज्ञान किया। तत्पश्चात् 'छायावाद' नाम से आदोलन चल पड़ा।

छायावाद विषयक लेखमाला रो पहले मार्च 1920 ई. हितकारिणी पत्रिका में छायावाद की संशोध परिमाण 'धरणप्रसाद' नामक कविता में दी है—

"भाषा क्या वह छायावाद
है न कहीं उसका अनुवाद"⁴

छायावाद शब्द का प्रयोग सन् 1920 ई. के आरागास 'दिवेंदी युग' के वर्योग्रुद्ध तार्हित्यकाश और आलोचकों ने निदा या धृणा के भाव से नहीं 24–25 वर्ष के एक अधकारे नवयुवक ने सद्भावना पूर्ण किया था।⁵ ये नवयुवक और पोई नहीं स्वयं मुकुटघर पाण्डेय जी थे।

पण्डित मुकुटघर पाण्डेय और छायावादी काव्य की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि उसने खड़ी योर्ता हिंदी को आधुनिक भावयोग्य से सुकृत रचनात्मक और समृद्धशाली काव्यभाषा बनाने की पठल की। हिंदी में छायावाद निवंध के प्रथम निवंध 'कवि स्थातत्र्य' में पाण्डेय जी ने रीति ग्रंथों की पतंत्रता से मुक्त होकर काव्य में व्यक्तित्व तथा भाव, छन्द, भाषा के प्रकाशन शीतों में मौलिकता की जावश्यकता पर जोर दिया है।

'छायावाद एक ऐसी मायामय सूखम वस्तु है कि शब्दों द्वारा उसका दीक-दीक वर्णन करना असंभव है। शब्द अपने स्वाभाविक मूल्य खोकर सांकेतिक धिन्ह मात्र दुधा करते हैं।'

छायावाद के कवि वस्तुओं को असाधारण दृष्टि से देखते हैं। उनकी रचना की तन्त्र्यां विरापताएँ उनकी इस दृष्टि पर आधारित रहती है, वह क्षणाग्र में रस्तुओं को विजती यी तरह स्पर्श करते हुई निकल जाती है। अस्तित्व और शीतों के साथ उसमें एक ताह की विचित्र उन्मादकता और अंतरंगता होती है जिसके कारण यत्तु उसके प्राकृतिक रूप से भिन्न रूप में दिखाई पड़ती है। यह अंतरंग दृष्टि ही छायावाद की विचित्र प्रकाशन रीति का मूल है। उसमें किसी वस्तु या दृश्य का ज्योंग का त्योंग विचर लिया जाता है पर शब्द ऐसे वंगमुक्त होते हैं कि माया उड़ती हुई जान पड़ती है। ऐसी रचनाओं में शब्द अपने वास्तविक मूल्य खोकर सांकेतिक विहन मात्र होते हैं।

इस प्रकार मुकुटघर पाण्डेय जी की सूखम दृष्टि ने छायावाद के मूलभावना आत्मनिष्ठ अन्तर्दृष्टि को पहचान दिया था। निवंध हिंदी में 'छायावाद' इस निवंध के माध्यम से छायावाद पर लगाये गये अन्तर्पत्ता आदि आरोपों का खण्डन करते हुए लिखते हैं – 'छायावाद की आवश्यकता हम इसलिए समझते हैं कि उसके काव्यों को नाय प्रकाशन का एक नया मार्ग मिलेगा। इस प्रकार के अनेक मार्गों अनेक रीतियों का होना ही उन्नत साहेत्क का लक्षण है।'

मुकुटघर पाण्डेय की रचनाओं में मन के बंधन की पीड़ा की अभिव्यक्ति है जो त्वतंगता प्राप्ति के लिए छटपटा रही है। काव्य स्वातंत्र्य में पाण्डेय जी के शब्द हैं सासार में प्रत्येक मनुष्य त्वतंत्रता चाहता है, किर भी उसे मानसिक भूमि में परतंत्र रहना क्यों पसंद होगा यह यात समझ में नहीं आती।

डॉ. नामयर सिंह का कथन है – "छायावाद का ऐतिहासिक एवं तात्त्विक पियेवन छायावाद पर पहला निवंध होने के साथ ही एक अत्यन्त सुझावज्ञ प्रभावशाली सीढ़ी भी है। इस निवंध जग महत्व ऐतिहासिक ही नहीं, स्थायी भी है।"⁶ पाण्डेय जी ने भावों की छाया या अस्पष्ट-अप्रत्यक्ष स्वरूप के लिए सांकेतिक अभिव्यक्ति हेतु छायावाद नाम सुझाया। वे छायावाद की किलपत्ता को सरल बनाकर जन सामान्य में लोकप्रिय बनाने के पक्षपात्र रहे। पाण्डेय जी के 'कविता' शीर्षक निवंध काव्यादर्शी और छायावाद के पर्याप्त को प्रमाणित करते हैं। वे काव्य में लोकगीतों की सारसता व श्रम-शक्ति का समावेश करना चाहते थे। उनका ध्यान गाँव में काम करने वाले गरोद किसानों, मजदूरों वीं और गगा। उन्होंने श्रम यीं महिना गाई –

"धर्म तुम मामीण किरान
सरजता, प्रिय शौदार्य निधान

छोड़ जन रायुल नगर नियास
निया क्यों विजन ग्राम मे गेह
नहीं प्रासादों की बुँद चाह
बुटीतें से क्यों इतना नेह।"

—किसान

पाण्डेय जी काव्यकला को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि – हृदयप्राढ़ी भाषा वित्र का नाम ही काव्य है, कविता प्रभावोत्पादक और मनोरंजक होती है। रोदर्य वर्णन के सिवाय कविता मे कुछ ऐसी विशेषता होनी चाहिए कि उसके पाठ से तर्वत्र ईश्वरीय भाव अथवा एक अद्दृश्य शक्ति या किसी अखण्ड नियम की व्यापकता या प्रधानता हो। साथ ही ये कहते हैं कि मानव जीवन का प्रयाह जब आच्यात्मिक भावों के समूद में जाकर तीन ही जाता है, तब यह अपने अतिम लक्ष्य पर पहुँच जाता है।

प्रथम विश्ववृद्ध के पश्चात् भारतीय जनता निराशा के सागर मे झूँव रही थी। ब्रिटिश तत्त्व के अत्याधार के कारण कवियों में अंसतोष और विद्रोह के भाव थे, वे इसे व्यक्त करने में असमर्प रहे। इन निकलन काल में कविता शीर्षक निवंध के अंतर्गत पाण्डेय जी ने नवयुवक कवियों को प्रोत्साहित करते हुए लिखा है – "हमारे कवि और लेखक इस और सचेष्ट हैं जोर वे देश की आवश्यकता को समझकर जन जागरण, एकता धीरता और स्वतंत्रता आदि के भाव वसावर फैला रहे हैं। यह बहुत ही शुभ लक्षण हैं और शीघ्र ही अमीर फल की प्राप्ति होगी।"⁷

देश की दुर्दशा पर चिंता व्यक्त करते हुए कवि आर्य सन्तानों को जागृत घरने का संकल्प लेते हैं। उठो चेतों की यह पक्कियाँ उल्लेखनीय हैं :

"उठो हे आर्य सन्तानों, सर्वेषा हो चुका प्यारे।
समय यह है न तोने का तजो आत्म्य को भाई।
लगो कर्तव्य मे अपने मारे दरिद्र्य दुखदाइं।
उदय हो सौख्य सूखज का गगन मे लालिमा छाई।"

—उठो चेतो

पण्डित मुकुटघर पाण्डेय की रचनाओं में साहित्य मनीषियों ने छायावाद की झलक देखी और चरहा। पाण्डेय जी ने श्री शारदा पत्रिका में विस्तार से प्रकाश डाला जो उनके चिंतन और अध्ययन जी अमूल्य निषेह है। छायावाद के प्रवर्तक कवि उन्हें माना जाता है पर वे विनाप्रापूर्वक कहते हैं कि 'मेरी रचनाओं में चाहे लोग जो भी खोंग ले परन्तु ये विशुद्ध रूप से मेरी रचनाओं पर आंतरिक सहभज अभिव्यक्ति मात्र है। उनमें न तो कर्म्मना की ऊँची उड़ान है न विचारों की उलझन, न भावों वीं दुरुहता। उनमें उर्दू यीं दीजों पीं चुलमुलाहट या जांपन भी नहीं। वह सरल सहज उद्गार मात्र है।'¹⁰

पण्डित मुकुटघर पाण्डेय ने 'हिंदी में छायावाद' नामक निवंध के गाध्य से 'छायावाद' का प्रचंतन किया। पाण्डेय जी का पद्य और गद्य दोनों में रामान अधिकार है। उनकी रचनाओं की सूची प्रत्युत है –

- 01) पूजापूल (काव्य संग्रह) – ब्रह्म प्रेस, इटावा : 1916
- 02) शीलयाला (अनुदित उपन्यास) – हरिदास एंड कंपनी कलकत्ता, 1916
- 03) परिश्रम (निवंध संग्रह) – हरिदास एंड कंपनी कलकत्ता : 1917

- 04) लग्जमा (अनूदित उपन्यास) – हरिदारा एंड कंपनी कालकाता : 1917
- 05) द्वयदान (कहानी संग्रह) – गत्यमाला, बनारस : 1918
- 06) मामा (अनूदित उपन्यास) – रिखायदास याहिनी एंड कंपनी, उडीरा : 1924
- 07) छायावाद एवं अन्य निवारण – भ्रम प्राकाशन, भोपाल : 1970
- 08) स्मृतिमुंज – तिरुपति प्रकाशन, हायुड : 1983
- 09) विश्वोध – श्री शारदा साहित्य सदन, रायगढ़ : 1984
- 10) छत्तीसगढ़ी भेदभूत – (अनूदित काव्य) – छत्तीसगढ़ लेखक संघ, रायगढ़ : 1994
- 11) हिंदी में छायावाद – तिरुपति प्रकाशन, हायुड : 1984

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय जी से संवादित अनेक संपादित पुस्तकों में प्रमुख हैं –

- 01) मुकुटधर पाण्डेय, व्यक्ति एवं रचना – सं. महावीर अग्रवाल, श्री प्रकाशन, दुर्ग (छ.ग.) : 2001
- 02) पण्डित मुकुटधर पाण्डेय चर्चनिका – छत्तीसगढ़ राज्य ठिंकिंग ग्रंथ अकादमी, रायपुर : 2007

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय जी के काव्य सरल और सहज हैं। उनमें अंत सौदर्य और आव्यासिक भावनाओं की प्रमुखता है जो छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषता है। उनके पास एक सरल अनुगृहीत जिज्ञासायें हैं। शब्दों का आड़म्बर नहीं है। कवीरदास की भाँति वे लिखते हैं –

यह दुनिया बाजार रूप है,
लोग बाजारी हैं भाइं।
काम, ग्रोध, मद, लोभ जनति है
वस्तु यहाँ विकने आई।

कवि को ईश्वरीय सत्ता का आमास पतितों के दुख में दीन-हीन के अशु नीर में, कृपक के हल में और कवि के काव्य में मिलता है –

“दीन हीन के अशु नीर में
पतितों के परिताप पीर में
सरल स्वभाव कृपक के हल में
पतित्रता रसणी के वल में
प्रम सीकर सं सिधित घन में
तेरा मिला प्रमाण।”

— विश्वोध

छत्तीसगढ़ी की मिट्टी से उन्हें विशेष अनुराग था। यहाँ की प्राकृतिक सौदर्य नदी-पहाड़, पशु, पर्यावरण से लगाव था। महानदी कविता की वंकियों प्रस्तुत हैं –

“कितना सुन्दर और मनोहर महानदी यह तेरा रूप
कलकल मध्य निर्मल, जलधारा, लहरों दी है छठा अनुप
तुझे देखकर रीशग की स्मृतियों उर में उतरी जाग
लेता है क्षेरों काल का अंगड़ाई अल्लू अनुराग।”
— महानदी

पाण्डेय जी के काव्य संग्रह पूजापूल में महानदी पाम गुणगान, धूल, गुलाम, प्रभात, सूर्या पटकर्तुओं का वर्णन आदि प्रकृति परक कविताएँ हैं। प्रकृति के प्रति कवि की गठी अत्मीयता है –

“हरिता पल्लवित नववृक्षों के दृश्य मनोद्वर।

होते मुदको विश्व वीच है जीसे सुखकर।

सुखकर वैसे अन्य दृश्य होते न करी हैं।

उनके आगे तुच्छ परम ये मुझे सभी हैं।।”

— मंसा प्रकृति प्रंग

प्राप्त जीवन का वर्णन करते हुए कवि ने प्रायः पनघट और पनिहारिनों का वर्णन किया है। उन प्रसंग में पाण्डेय जी ने सहज भावों को ही अभिव्यक्ति दी है :

“पनिहारिन पानी सेने को,

पक्षि नौंध कर जाती है।

रिर पर नीर पूर्ण मिट्टी के,

कलसे ले-ले आती है।।”

रात्रि के समय कुररी के करुण विलाप को सुनकर पाण्डेय जी का हृदय कलणा तं भर उठा। मन ही मन चुररी के प्रति काव्य की रचना कर डाली। ‘कुररी के प्रति हिंदी काव्य साहित्य की एक ऐसी अनद रचना है जिसने युग निर्माण का कार्य किया है। पदुमलाल पुन्नालाल यज्ञी ने चुररी के प्रति रचना को प्रथम छायावादी काव्य माना है। पंक्ति प्रस्तुत है –

“चता मुझे ऐ विहग विदेशी अपने जी की बात

पिछड़ा था तू कहां, आ रहा जो कर इतनी रात।।”

— चुररी के प्रति

गद्य और धद्य दोनों में पाण्डेय जी का समान अधिकार है। हिंदी के अतिरिक्त संस्कृत, उड़िया, बंगला और अंग्रेजी भाषा का भी ज्ञान था। उनकी प्रकाशित गद्य है – पूजापूल, रीतवाला, नामा, लच्छमा, पश्चिम और हृदयदारां हैं। उन्होंने महाकवि कालिदास की कालजयी कृति भेदभूत का छत्तीसगढ़ी में चावपूर्ण अनुवाद किया। जो छत्तीसगढ़ी भाषा के संवर्धन और विकास में भीत के पथर सिद्ध होते हैं। कथा के प्रासंग में कहा गया है –

“एक हर अपन काम मा

गलती कछु कर लारिस

तव गुवेर हर शाप छोड अलका ले

ओला निकारिस।।”

— भेदभूत (छत्तीसगढ़ी)

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय काव्य चर्चा के दोसन वालिदास, भवभूति, तुलसीदास, कमीर, मीरा, सुरदास, शोली, मेटरलिंग, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, माइकेल मधुसूदन दत्त, फकीर मोहन सेनापति, गिर्जा गालिय के जीवन से लेकर उनके साहित्य की चर्चा करते थे। अपने समकालीन कवियों में मैथिलीशरण गुप्त और प्रसादजी की चर्चा करते थे।

महाकथि कालिदास और तुलसीदास उनके सबसे प्रिय कवि हैं। 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' और 'विनय पत्रिका' उनके सर्वाधिक प्रिय ग्रंथों में से हैं। पाण्डेय जी महात्मा गांधी जी के विचारों से प्रभावित थे। गांधी पर वे लिखते हैं –

"तुम शुद्ध युद्ध की परम्परा में आये
 मानव थे ऐसे, देख की देव लजाये
 भारत के ही व्याप्ति, अखिल लोक के भ्राता
 तुम आये वन दलितों के भाष्य विद्याता।"

— गांधी के प्रति

इस प्रकार पाण्डेय जी के साहित्य में भाषा को अपनी संस्कृति और संवेदनात्मक उर्जा के अनूठे संसार को व्यक्त करने की विभ्यात्मक रचना, भावात्मक तथ्यों को अधिव्यक्त करने वाल सांकेतिकता, संवेदना की तीव्रता को प्रेषित करने वाली प्रतीकात्मकता उसने प्रदान की है। भाषा के प्रति परंपरागत वर्त्तु दृष्टि के बंदनों को तोड़कर उत्तरे अपनी भाव दृष्टि से वस्तु को नए रूप में प्रस्तुत किया। शब्दों का अर्थ, भाषणों और संवेदना के नवीन संस्कारों के अनुरूप ढालने की काग्र कोशिश परिषिद्ध मुकुटधर पाण्डेय ने किया। इसके लिए हिंदी साहित्य जगत में वे सदैव प्रासंगिक रहेंगे। अपने देशकाल के परिवर्तित जीवन संदर्भ, जाशा, आकाशाओं और वर्धार्थ के बदलते सरगम के अनुरूप एक नई सामाजिक और विश्व दृष्टि से विकसित करने की भरसक कोशिश की है।

व्यक्ति स्वातंत्र्य और रुद्धियों से विद्रोह की भावना ने पाण्डेय जी को अपना एक निजी और दैयतिक मुड़ावरा तलाश करने के लिए प्रेरित किया था, वह अपनी रणनीति में नितांत व्यक्तिगत, व्यक्तिनिष्ठ और व्यक्तियादी होता गया। पाण्डेय जी के साहित्य आधुनिकता के सारे प्रतिमानों पर खड़ी उत्तरती है और वह पूर्ण रूप से आधुनिक है। इसलिए वह सदैव प्रासंगिक रहेगी। नामवर सिंह जी का छायावाद के परिफ़ेक्ष्य में कथन है – "छायावाद उत्तर राष्ट्रीय जागरण की काव्यात्मक अभियांत्रिकी है जो एक और पुरानी रुद्धियों से मुक्ति घाहता है और दूतरी और विदेशी परामर्शीनता से";¹¹ नामवर सिंह ने मुक्ति को केन्द्र में रखा और स्वाधीनता की बात कही। रुद्धियाँ समाज को कमज़ोर बना रही थीं विदेशी पराधीनता अर्थात् अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति। इन सामाजिक तथ्यों के नायम जे वे 'छायावाद' को युग संदर्भ से जोड़ते हैं।

पाण्डेय जी के काव्य में प्रकृति को माध्यम से मानव की स्वतंत्रता की ओर संकेत करते हैं व्याप्ति प्रकृति के सारे उपादान पर्यात, नदी, झरने, पेड़–पौधे, विडियों, सूर्य का प्रकाश, जल, वायु आदि स्वतंत्र हैं। इन्हें कोई गुलाम नहीं बना सकता है।

'हिंदी में छायावाद' और 'कुरुरी' जैसी अमर ऐतिहासिक रचना का सुर्जन कर 6 नवम्बर 1989 ई. वो पंचतत्व में विलीन हो गये। जीवन के अंतिम क्षण के संबंध में पाण्डेय जी की निम्न पवित्रियाँ उल्लेखनीय हैं –

"जीवन की संघ्या में अब तो है कंबल इतना मन–काप
 अपनी ममतामयी गोद में, दे मुझको अंतिम विश्राम ॥
 चित्रोत्तरे, वता त् मुझको वह दिन सचमुच कितना दूर ।
 प्राण प्रतीक्षारत् लूटेंगे, मृत्यु पर्व का सुख भरपूर ॥"

महाननदी-1

खड़ी बोती हिंदी के विकास, उत्कर्ष में छायावाद और परिषिद्ध मुकुटधर पाण्डेय के साहित्य की प्रासंगिकता सदैव यनी रहेगी।

सदर्मा प्रथ सूची –

- परिषिद्ध मुकुटधर पाण्डेय ध्यानिका, (प्रस्तावना से) प्रो. दिनेश पाण्डेय जी। गिहारी लाल साहू।
- साहित्यान्योपासन, विनय शोहन शर्मा; पृ. क्र. 14–16।
- छायावाद और मुकुटधर पाण्डेय, सं. डॉ वलदेव राव, पृ. क्र. 136।
- परिषिद्ध मु. पा. ध्यानिका, (प्रस्तावना से) त्र. प्रो. दिनेश पाण्डेय डॉ. विठारी लाल साहू।
- छायावाद और मुकुटधर पाण्डेय, संपादक डॉ. वलदेव राव, पृ. क्र. 138।
- परिषिद्ध मु. पा. ध्यानिका, संपादक प्रो. दिनेश पाण्डेय डॉ. विठारी लाल साहू, पृ. क्र. 139।
- परिषिद्ध मु. पा. ध्यानिका, संपादक प्रो. दिनेश पाण्डेय डॉ. विठारी लाल साहू, पृ. क्र. 151।
- मुकुटधर पाण्डेय व्यक्ति एवं रचना, संपादक महावीर अग्रवाल (विनय पाठक आतेख), पृ. क्र. 93।
- मुकुटधर पाण्डेय व्यक्ति एवं रचना, संपादक महावीर अग्रवाल (विनय पाठक आतंड़), पृ. क्र. 95।
- मुकुटधर पाण्डेय व्यक्ति एवं रचना, संपादक महावीर अग्रवाल; पृ. क्र. 75।
- मुकुटधर पाण्डेय व्यक्ति एवं रचना, (छायावाद संख नामवर सिंह), पृ. क्र. 177।

ISSN : 2278-4632

JUNI KHYAT

जूनी ख्यात

IMPACT FACTOR : 6.625

UGC CARE Group I Journal

VOL 10 ISSUE -08 NO.09 August 2020



JUNI KHYAT
जूनी ख्यात

JUNI KHYAT

जूनी ख्यात

(संयुक्तांक)

सपादक

डॉ. बी.एल. भाद्रानी

पूर्व विभागाध्यक्ष

इतिहास विभाग,

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़

प्रबंधक सपादक

श्याम महर्ज



मरुभूमि शोध संस्थान

संस्कृति भवन

एन.एच. 11, श्रीदुंगरपुर (बीकानेर) राजस्थान

INDEX

S.NO.	TITLE	Page
1	ETHNIC CONFLICTS AND TRAUMA THEORY IN NAYOMI MUNAWEERA'S ISLAND OF THOUSAND MIRRORS	5
2	दाक्षिण एशिया में आतंकवाद एक गंभीर चुनौती	1
3	IMPACT OF FAMILY STRUCTURE AMONG SCHOOL CHILDREN ON EXTRAVERTION	1
4	पण्डित मुकुटधर पाण्डेय की कविता और गद्य साहित्य में लोक-चेतना	13
5	EMPLOYEE RETENTION IN BIG BAZAAR, KALABURAGI CITY	23
6	कोशी क्षेत्र के मंदिरों की सांस्कृतिक भूमिका	28
7	पण्डित मुकुटधर पाण्डेय की कविता और गद्य साहित्य में लोक-चेतना	32
8	संगीत साधना पद्धति व योग में अन्तर्सम्बन्ध	38
9	द व्यूटीफुल ट्री और पर्यावरणीय स्वच्छता : गाँधी जी के विचार पर एक अध्ययन	43
10	DESIGN DEVELOPMENT AND PHARMACEUTICAL EVALUATION OF FLOATING MICROSPHERES OF PANTOPRAZOLE	48
11	DESIGN AND DEVELOPMENT AND PHARMACEUTICAL EVALUATION OF A FAST MOUTH DISSOLVING FILM AS DRUG DELIVERY SYSTEM	62
12	A REVIEW ON ARSENIC MANAGEMENT	79
13	OVERVIEW ON ADVENTURE SPORTS TOURISM IN INDIA	89
14	A STUDY TO ASSESS THE KNOWLEDGE ON NON-PHARMACOLOGICAL THERAPY AMONG ADULTS WITH LOWBACK PAIN IN SELECTED RURAL AREAS, KARAikal	94
15	GROWTH KINETIC STUDY OF GRAM POSITIVE AND GRAM NEGATIVE BACTERIA UNDER SEVERAL BIO-CHEMICAL STRESS CONDITIONS	100
16	WOMAN AS A SYMBOL OF SACRIFICE IN KAMALA MARKANDAYA'S NOVEL NECTAR IN A SIEVE	105
17	महात्मा गांधी: आदर्श ग्राम स्वराज्य की संकल्पना	108
18	RELIGION, DEVADASI PRACTICE AND DEVADASI CHILDREN- A SOCIOLOGICAL STUDY	111
19	WOMEN CONSTRUCTION WORKERS IN KARNATAKA : A SOCIOLOGICAL STUDY	120
20	REVIEWING LITERATURE OF CROSS BUYING CONSUMER BEHAVIOUR	129
21	अष्टाङ्गग्रहदयम् के सूत्रस्थान में वर्णित औषधियों का समीक्षात्मक अध्ययन	147
22	वाग्मित रचित अष्टाङ्गग्रहदयम् के सूत्रस्थान का दार्शनिक-अध्ययन	151
23	आधुनिक परिपेरक्ष्य में 'जैन दर्शन की समता' की उपयोगिता	158
24	वालश्रम - समाज और सरकार	164
25	A STUDY ON SEISMIC ANALYSIS OF RCC STRUCTURE	169
26	POST-INDEPENDENCE ERA OF WOMEN EMANCIPATION ON INDIAN CINEMA: A VIEW FROM FILM MOTHER INDIA	175
27	WOMEN'S POLITICAL PARTICIPATION IN INDIA	180
28	भारतीय लोक और जनजातीय कलारू विभ के लिए एक धरोहर	183

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय की कविता और गद्य साहित्य में लोक-चेतना

शोप निर्देशक
ओ. जयपाल रिठ प्रजापति
गिरावङ्गथा, रिठी गिरावङ्ग
पण्डित मुकुटधर सार्ग (पुस्तक) नि.वि.
पर्सीरामज, वितानपुर
गो.नं. 9229703055
ईमेल-singh.jalpal82@gmail.com

शोधार्थी
श्री बीरुल लल बरगाह
शोधार्थी, साला. प्राच्यापाल (पिंडी)
राजीव गांधी शासा. महाविद्यालय. सिंगापुर
गो.नं. 9589914278
ईमेल-blrulalbargah@gmail.com

शोप सारांश :

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय जी प्रकृति प्रेम, मानव प्रेम, देशमक्षित, वैयक्तिक चेतना, लोकहित एवं रामाज कल्याण की भावना को ही साहित्य की सार्थकता मानते हैं। पाण्डेय जी का विचार है साहित्य (गाय्य/गद्य) ऐसी हो जो जननामनारा के सुपुत्र मार्यों को जागृत कर उन्हें कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करें। उन्होंने अपनी लेखनी से सामाजिक रुद्धियों, दीन-हीनों, शोपियों, दमित, किसानों और मजदूरों के अनेक जीवन चित्र एवं उनके सपने अंकित किए हैं। उनकी कविता संसार वस्तुतः वह लोक सामान्य जीवन हैं जिसे अति सामान्य समझकर अन्य कवि अपनी अँखें घंट कर लेते हैं।

भूमिका :

मुकुटधर पाण्डेय जी लोक साहित्य की चेतना के साथ विशुद्ध हिंदी साहित्य की द्विवेदीयुगीन एवं छायाचारी युगीन चेतना को धारण करने वाले साहित्यकार है। पाण्डेय जी के रचनाकर्म में छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य की अँच है तो दूसरी तरफ छायाचारी भावबोध की पुकार भी है। पाण्डेय जी की गणना यशस्वी और शीर्षस्थ साहित्यकारों में होती है। उनकी रचना 'कुररी के प्रति तथा 'छायाचार लेखमाला अमर और ऐतिहासिक रचनाएँ हैं। मुकुटधर पाण्डेय ही 'छायाचार' के प्रवर्तक हैं। उन्होंने हिंदी के विकास के लिए सार्थक प्रयास किया है, उनकी हिंदी युग्मान कविता इस बात को प्रमाणित करने के लिए साक्षी है—

‘हिंदी तन है, हिंदी मन है

हिंदी धन है हिंदी जन है

हिंदी मारत का साम्बल है

हिंदी पुण्य प्रेम का फल है

हिंदी संघ-शक्ति है अद्युत

अविजित त्रिमुख ज्ञान’

— हिंदी युग्मान

लोक-चेतना : अर्थ एवं परिमाणा —

लोक – संसार, मुन्‌वन्, पृथ्वी, समाज मानव, जागि, प्रजा, समूह, भू-भाग, प्रांत चेतना – बुद्धि विदेश से काम लेना, होश में आना, सोचना विचारना आदि

परिमाण :-

- 1) डॉ वासुदेव शरण अग्रवाल के अनुसार – ‘लोक हमारे जीवन का महासमूद है जिसमें मूल, भविष्य और वर्तमान सभी कृचित संचित रहता है। ‘लोक ही राष्ट्र का अमर वस्तुप है।’¹
- 2) तुलसी शब्द कोश में ‘लोक’ का अर्थ “दृश्यमान जगत एवं ‘लोग’ से लिया गया है।²
- 3) ‘लोक नगरों और ग्रामों में फैली हुर्द वह समूदी जनता है जिनके व्यवहारिक ज्ञान का आधार केवल पौधियों ही नहीं है विलासिता और सुकुमारता को जीवित रखने के लिए जो वस्तुएँ आवश्यक होती हैं उनको उत्पन्न करते हैं।³

— आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी चेतना शब्द का प्रयोग बुद्धि, ज्ञान, होश, समझना, विचारना, स्मृति, मनोवृत्ति, चेतनता, सुधि आदि वृहद अर्थों में लिया गया है।

परिमाण : डॉ अम्बलगे के अनुसार – “चेतना प्राणीमात्र में निहित वह शक्ति है जो उन्हें चैतन्यमय बनाकर सजीव रिश्व बनाती है।⁴

‘जब व्यक्ति की चेतना में वाह्य भौतिक जगत की सक्रिय घटनाओं का प्रभाव पड़ता है तो मानव मरितपक्ष में अनेक मानसिक क्रियाओं की अनुभूति, हर्ष, लज्जा, शोक, त्रास, क्रोध, जुगासा, धृणा, ग्लानि, कुण्ठा और आकोश आदि का उद्भव और विकास हो जाता है। चेतना का दूसरा तत्त्व वेदना है जिसमें उपर्युक्त सभी चेतना की विविधताएँ उपरिथित रहती है।’

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर हम कह सकते हैं कि 'लोक-चेतना' एक ऐसी दृष्टि है जो अपने युग का निरीक्षण कर वारतविकता को सम्पूर्ण समाज के सामने प्रत्युत करती है। 'लोक-चेतना' एक दर्पण के समान, परिवेश, घटनाओं का व्यथार्थ वित्र प्रत्युत करती है।

शोध प्रविधि : प्रत्युत शोध प्रयंध में प्राकृतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक शोध का सहारा लिया गया है।

विवेचन :-

पाण्डेय जी के अनुसार सार्थक साहित्य वह है जिसमें लोक हित एवं समाज कल्याण की भावना निहित हो। जिस साहित्य में लोक-चेतना के माध्यम से लोकहित का उद्देश्य न हो वह साहित्य निर्धक है, उद्देश्यहीन है। पाण्डेय जी के अनुसार कविता ऐसी हो जो जनता को जागृत कर उनके सुन्त मावों को जगा सके, उनके मन मरितक को झकझोर कर रखे दें। पाण्डेय जी ने लोक-चेतना हेतु काव्य को गद्य की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली राधान रस्तीकार किया है। पाण्डेय जी ने वैयक्तिक, सामाजिक, राजनीतिक, राष्ट्रीय चेतना आदि विषयों को माध्यम बनाकर लोगों को जागरूक करने का भरोसा प्रयास किया है।

पाण्डेय जी के काव्य संग्रह 'पूजाफूल' में राष्ट्रमति, प्रकृति, प्रेम और वैयक्तिक चेतना को देखा जा सकता है। पाण्डेय जी शांत स्वभाव के थे, लिंगिन जहाँ अन्याय, अत्याचार देखते थे वहाँ सटीक वक्तव्य कहने से नहीं चूकते थे। यीन आक्रमण के समय वे बहुत उत्तेजित हुए। उन्होंने 'रणाङ्गन' शीर्षक कविता लिखकर नवजावानों का आह्वान इन शब्दों में किया -

'हे अमृत के पुत्र
हे पुरुष शार्दुल हे रणवीर
छोड़कर तन्दा छोड़ता काल
एक पल न विलम्ब का है काल
खुल गया यह स्वर्ण का है द्वार
लो लपक कर हाथ में तत्त्वार।'

भक्तिप्रकर कविताएँ जिसमें राष्ट्रहित की कामना की गई है। 'सर्व भवन्तु सुखिनः सर्वं सन्तु निरामया' की भावना को चरितार्थ करते हुए सभी देशवासी चरित्रवान बनें, सब का जीवन सुखी हो जाए -

"दीर्जे हमें विमल भक्ति विनो ! तुम्हारी ।
कीर्ति विनाश दुख पाप कुदुदि सारी ॥
होये सुखी निज सभी गुरु बन्धु मित्र ।
ग्राता तथा गविनी आदि सच्चरित्र।"

गाँव में निसारों कुलवधूँ समूह में कार्तिक स्नान करती हैं। यहाँ प्रकृति और मनुष्य का सुखद साहचर्य दर्शनीय है। यहाँ पाण्डेय जी ने लोक-चेतना का सुन्दर वित्र उकेरा है -

"कुल वधुर्ं करते हैं स्नान
होता केसा मंगल गान।"

पाण्डेय जी ने मानव स्वभाव की सुन्दर व्याख्या की है। उनके अनुसार मानव गुणों की ओर ध्यान न देकर उनकी प्रथम दृष्टि अन्युणों की ओर जाती है। ऐसा करके वे अपने अहं माय की पुष्टि करते हैं। 'गुलाब' कविता के माध्यम से कवि अवगुणों को त्यागकर सदगुणों को ग्रहण करने की बात कही है -

"ऐ गुलाब ! फूलों का राजा, है तू सर्वगुणों की धाम।

पर दुर्जन तेरे काटे लख, तुझे समझते हैं वेकाम।"

बढ़ते हुए औद्योगीकरण और पूँजीजावादी सम्पत्ति के परिणामस्वरूप कृषकों और श्रमिकों की दीन-हीन दशा का चित्रण निन्म पंक्ति के माध्यम से करते हैं -

"भारत का यह कृषक खेत में कठिन काम करता है

किन्तु वर्ष में कई महिने भूमा ही रहता है।"

ग्राम गुण-गान कविता के माध्यम से कवि ने नगरों की अपेक्षा ग्रामों की महत्ता पर प्रकाश लालते हुए पाण्डेय जी लिखते हैं।

"नगरों में रहता था मैं, मुझके ग्राम न भाता था।"

छोड़ ग्राम नगरों में रहना, मुझे नहीं अब भाता है।"

मेरा प्रकृति प्रेम कविता के माध्यम से कवि ने प्रकृति को मनुष्य जीव-जन्म सभी के लिए महत्वपूर्ण बताया है। प्रकृति की अनुपस्थिति में मनुष्य और समस्त जीवों का कोई अस्तित्व ही नहीं है।

"इन्हें देखकर मन मेरा प्रसन्न होता है।"

सांसारिक दुख ताप सभी छिन में खोता है।"

कवि जी कल्पना अत्यंत सुन्दर है। वे कोयल के माध्यम से गानव को मधुर वचन बोलने का संदेश देते हैं। वे सुन्दरता की अपेक्षा गुणवत्ता को अधिक गहरा देते हैं -

"गुण उजागरी, मधुर भाषणी, यह कोयल अति प्यारी है।"

इसकी ताने न्यारी भरी, गुणि तक भी सुखकारी है।"

'कुरुरी' कविता के माध्यम से मनुष्य की व्याकुलता को राय और अद्भूत कल्पना द्वारा अभियक्षि देने में कवि अधिक सफल रहा है। 'कुरुरी' के प्रति छायावाद की प्रधाम कविता है -

"बता मुझे ऐ विदा विदेशी अपने जी वात।"

पिछड़ा था तू कहाँ, आ रहा जो कर इन्हीं रात।"

कुरुरी पंक्ति के माध्यम से कवि ने "अतिथि देवो भव" की भावना को चरितार्थ किया है।

गायों की रक्षा हेतु उनके सही तरीके से देखभाल, रख रखाव हेतु कवि लोगों से प्रार्थना करते हैं। गायों की दशा सुधारने हेतु आहवान करते हैं -

"दे दुख गों को नर जो कदापि, है लोक में सो अति, नीच पापी।

विपति से उहें शीघ्र उत्तरा, गो वंश की भित्र दशा सुधारो।"

कवि प्राकृतिक उपादानों से अपना सामंजस्य स्थापित कर लेता है। ऐसी दशा में आवश्यक है कि कवि को सरिता यीं कल-कल निनाद ने अत्मविमोर कर दिया है वह अपना परिचय दे। पाण्डेय जी महानदी की कल-कल निनाद से प्रश्न करते हैं -

"शीतल रखच्छ नीर ले सुन्दर, बता कहाँ से आती है ?

इस जल्दी में महानदी तू, कहाँ धूमने जाती है ?"

कवि कहते हैं विद्या के अमावस्य में मनुष्य, मनुष्य न होकर पशु तुल्य बन जाता है और प्रत्येक स्थान पर अपमान पाता है। इस पंक्ति के माध्यम से कवि ने विद्या के महत्व का प्रतिपादन किया है -

"विद्या बिन नर पशु समान पाते ठौर-ठौर अपमान।"

विद्या सम धन है नहिं आन, विद्या अर्जन करो सुजान।"

जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है इस भावना को साकार करते हुए इस पंक्ति के माध्यम से कवि जगत का कल्पना करना चाहते हैं -

"लेकर जन्म जहाँ सुख पाया, अन्न शाक है जिसका खाया।

उसे कभी मत जाना भूल, जन्मभूमि जो सुख का मूल।"

कवि के अनुसार हमारा जीवन तभी सफल हो सकता है जब हम सार्थक जीवन जीते हैं। जिस उद्देश्य हेतु हमारा जन्म हुआ है उस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु हम प्रयास करते हैं -

"सदाचार सदाचार से जिसने सब प्रकार नाता जोड़ा।

दुराचार दुर्गुण, दुरितों से जिसने अपना मुंह मोड़ा।"

प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से कवि संसार की नश्वरता को प्रकट करते हुए कहते हैं कि समय बहुत कीमती है इसे व्यथ में बर्बाद न करें -

"उसाह से था हो रहा सुख साज अति सुन्दर जहाँ।

देखो अपी ही मच गया है दुख का क्रन्दन वहाँ।"

कवि कहते हैं मनुष्य को प्रकृति, पेड़-पीछे, गाय के समान परोपकार करते हुए जीवन जीने की प्रेरणा दे रहे हैं -

"परोपकारार्थ बनी, विचार जो सृष्टि सारी यह दृष्टि आती है।

संसार में परमार्थ सार, है अन्तरात्मा हम को सिखाती है।"

पाण्डेय जी कहते हैं कि यह संसार क्षणिक है नश्वर है अतः इस संसार में जन्म लेकर अच्छे कर्म करना चाहिए।

"यह बाजार अचल है कहकर, हम सब करते नित्य गुमान।

कम-कम घटती आयु हमारी, इसका हमको जरा न ज्ञान।"

पाण्डेय जी कहते हैं कि ईश्वर का निवास दबे, कुचले हुए लोगों के ऊँस् रुपी जल में दुखियों के पीड़ा, संताप में, संस्था के समय घलने वाली हवाओं में, प्रकृति के कण-कण में ईश्वर का निवास है। हमें इनका सम्मान करना चाहिए-

"दीन हीन के अशु नीर में,

पतितो के परिताप पीर में,

संध्या के चंचल समीर में,

करता था तू गान।"

- 2) समसामयिक संदर्भों के निकप पर पं. मुकुटधर पाण्डेय व डॉ. विमल कुमार पाठक के साहित्य का तुलनात्मक अनुशीलन डॉ. रंजना मिश्रा। पृ. क्र. 132-133।
- 3) समसामयिक संदर्भों के निकप पर पं. मुकुटधर पाण्डेय व डॉ. विमल कुमार पाठक के साहित्य का तुलनात्मक अनुशीलन डॉ. रंजना मिश्रा। पृ. क्र. 132-133।
- 4) छायाचार और मुकुटधर पाण्डेय पृ. क्र. 86।
- 5) पूजाफूल मुकुटधर पाण्डेय पृ. क्र. 61।
- 6) छायाचार और पं. मुकुटधर पाण्डेय पृ. क्र. 34।
- 7) पूजाफूल मुकुटधर पाण्डेय पृ. क्र. 25।
- 8) छायाचार और मुकुटधर पाण्डेय संपादक डॉ. बलदेव पृ. क्र. 32।
- 9) छायाचार और मुकुटधर पाण्डेय संपादक डॉ. बलदेव पृ. क्र. 36।
- 10) पण्डित मुकुटधर पाण्डेय चयनिका प्रो. दिनेश पाण्डेय डॉ. विहारीलाल साहु पृ. क्र. 21।
- 11) पूजाफूल पृ. क्र. 28।
- 12) छायाचार और मुकुटधर पाण्डेय संपादक डॉ. बलदेव पृ. क्र. 74।
- 13) पूजाफूल मुकुटधर पाण्डेय पृ. क्र. 68।
- 14) पूजाफूल मुकुटधर पाण्डेय पृ. क्र. 30।
- 15) पूजाफूल मुकुटधर पाण्डेय पृ. क्र. 29।
- 16) पूजाफूल मुकुटधर पाण्डेय पृ. क्र. 43।
- 17) पूजाफूल मुकुटधर पाण्डेय पृ. क्र. 97-99, जीवन साफल्य पं. मुकुटधर पाण्डेय चयनिका डॉ. विहारीलाल साहु पृ. क्र. 26।
- 18) पूजाफूल मुकुटधर पाण्डेय पृ. क्र. 51।
- 19) पूजाफूल मुकुटधर पाण्डेय पृ. क्र. 47।
- 20) पूजाफूल मुकुटधर पाण्डेय पृ. क्र. 57।
- 21) विश्वबोध मुकुटधर पाण्डेय पृ. क्र. 75।
- 22) पं. मुकुटधर पाण्डेय व्यक्तित्व एवं कृतित्व संपादक नंदकिशोर तिवारी पृ. 102।
- 23) किसान, पं. मुकुटधर पाण्डेय चयनिका, छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रन्थ अकादमी सं. प्रो. दिनेश पाण्डेय, विहारीलाल साहु पृ. क्र. 66।
- 24) पूजाफूल पं. मुकुटधर पाण्डेय पृ. क्र. 152।
- 25) खामचावाला, पं. मुकुटधर पाण्डेय, व्यक्ति एवं रचना, सं. महावीर अग्रवाल, पृ. क्र. 423।
- 26) पूजाफूल पं. मुकुटधर पाण्डेय पृ. क्र. 67।
- 27) महानदी—, पं. मुकुटधर पाण्डेय चयनिका, छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रन्थ अकादमी, रायपुर सं. प्रो. दिनेश पाण्डेय, विहारीलाल साहु पृ. क्र. 66।
- 28) छायाचार और मुकुटधर पाण्डेय संपादक डॉ. बलदेव पृ. 71।
- 29) पं. मुकुटधर पाण्डेय चयनिका संपादक प्रो. दिनेश पाण्डेय और डॉ. विहारीलाल साहु पृ.क्र. 110।

